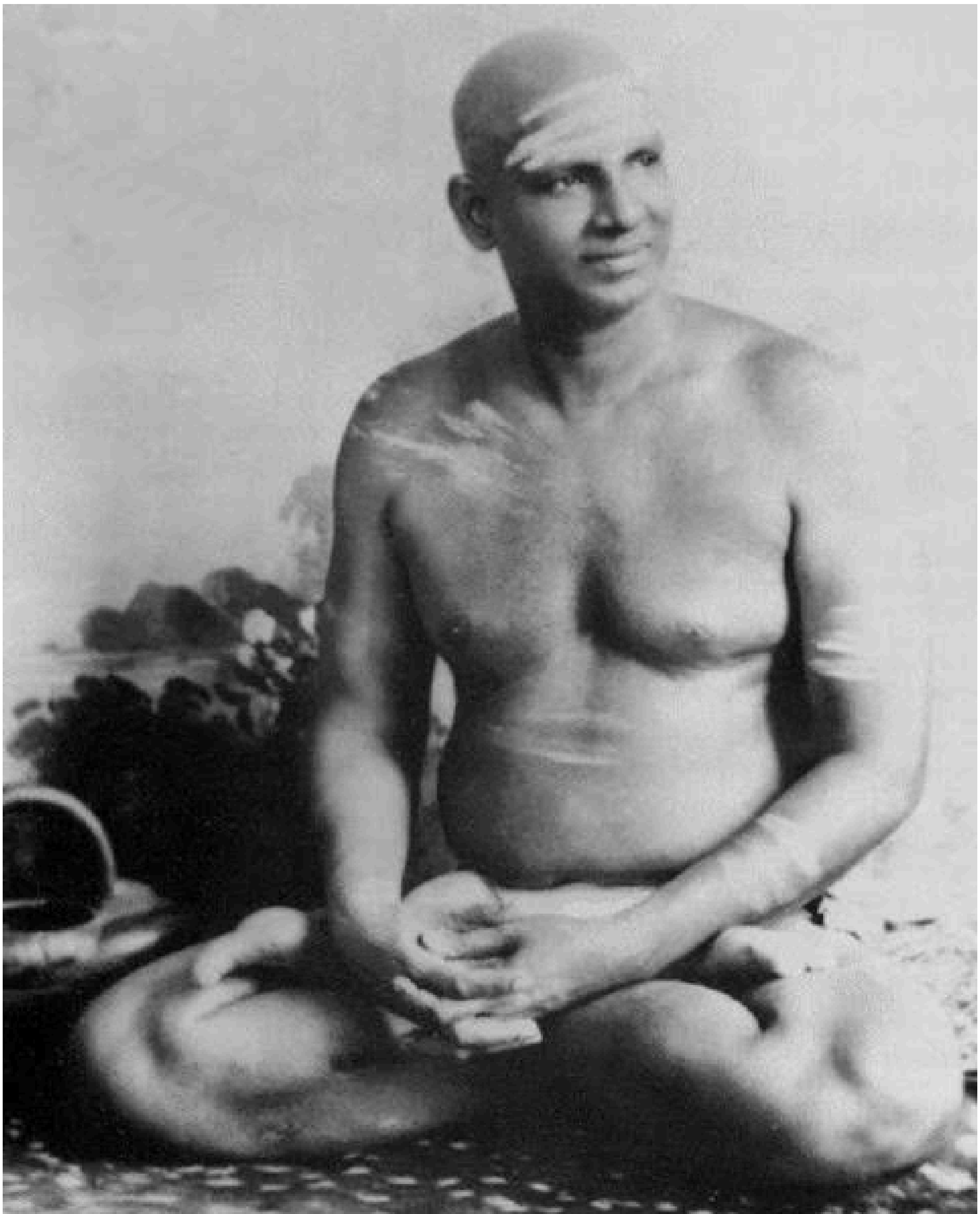
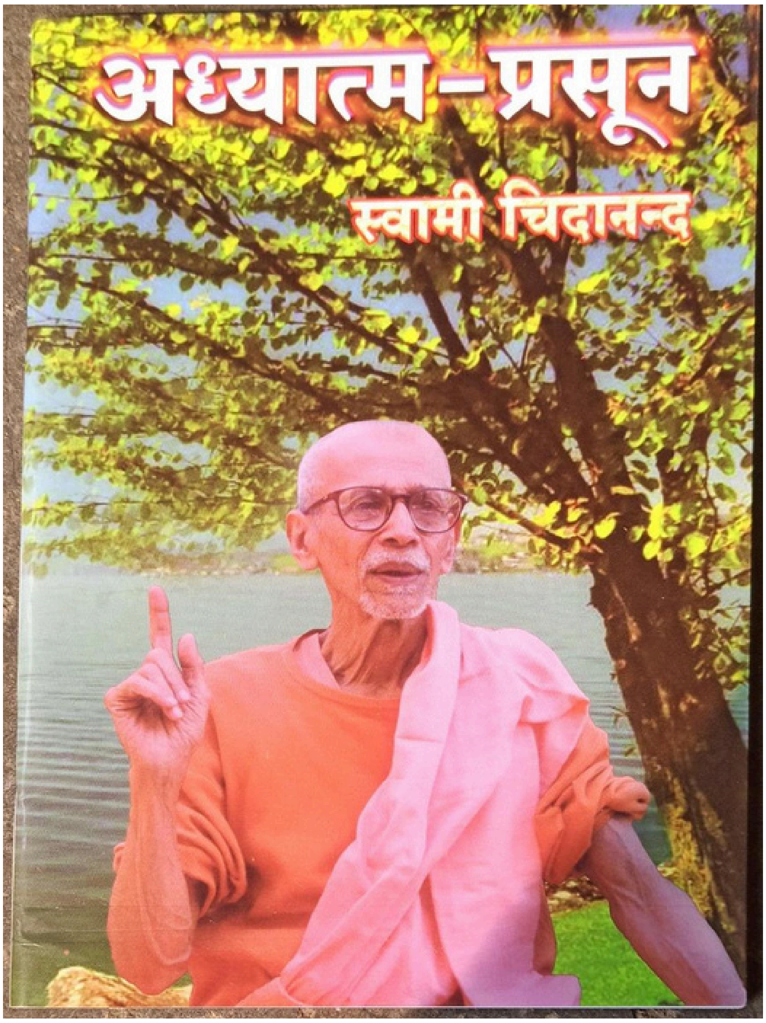



अध्यात्म-प्रसून
स्वामी चिदानन्द

अध्यात्म-प्रसून

श्रीस्वामीचिदानन्द

अनुवाददका

श्रीमतीगुलुशनसिदेव

प्रकाशक

दडिवाइनलाइफसोसायटी

पत्रालय:शशवानन्दनगर-२४९१९२

जिला:दटहरीगढ़वाल,उत्तराखण्(दहमालय),भारत

www.sivanandaonline.org,www.dlshq.org

प्रथमदहन्दीसंस्करण:१९८५

तृतीयदहन्दीसंस्करण:२०१६

(५००प्रततया)ाँ

HC1

PRICE:35/-

'दडिवाइनलाइफसोसायटी,शशवानन्दनगर'केशलए

स्वामीपद्मनाभानन्दद्वाराप्रकाशशततथाउन्हींकेद्वारा'योग-वेदान्त

फारेस्टएकिोमीप्रेस,पो.शशवानन्दनगर-२४९१९२,

जिलादटहरीगढ़वाल,उत्तराखण्ड'मेंमुदित।

ForonlineordersandCataloguevisit:disbooks.org

प्रकाशकीय

पूज्यश्रीस्वामीचिदानन्दिीमहारािकीषष्टय्ब्दपूततिकेअवसरपरप्रकाशशतदशलघु पुज स्तकाओं से संक शलतउनकेलेख इसपुस् तकमेंप्रस्तुत ककयेगयेहैं।येलेख ऐसे अध्यात्म-प्रसून केसमानहैं,जिनकीसुगजन्किभीकमनहींहोतीतथाजिनकासौन्दयिकभीबासीनहींपड़ता।

अज्ञानसे उत्पन्नभ्राजन्तयोंने मानवि–ीवनमेंकईप्रकारकीदुगु न्िि फैलारखीहै।यदद आध्याजत्मकसिाकइनआध्याजत्मकप्रसूनोंसेमागि–तनदेशनप्राप्तकरेंगे,तोउनकासािना-पथसदैव सुवाशसतहीरहेगा।

इनलेखोंमेंजिनववषयोंकातनरूपणककयागयाहै,वेववशभन्नपृष्ूटठभूशमयोंकेसमस्त सािकोंकेशलएउपयोगीह।ैंउनकीववश्विनीनववषय-सामग्रीसभीसािकोंकीअमूल्यसम्पवत्तहै।

आशा है, सािक गण इनका स्वाध्याय तथा इन पर मनन-चिन्तन करके अध्यात्म-तनश्रयणी परतनबािरूपसेऊध्वगिमनकरसकेंगे।

११-९-१९८५ **-द डिवाइन लाइफ सोसायटी**

ववश्व-प्राथनिा

(स्वामीशिवानन्दसरस्वती)

ओप्रेम-शसन्ुि,क़िरुणा-सागर!
तुमपरमपूज्यपरमेश्वरहो।
साष्टांगप्रणतहमहैंप्रभुवर!
करतेहैंनमस्कारतुमको।

सजचिदानन्दतुमहोभगवन्!ु्
सवज्ञि,सवव्यिापकभीहो।
कण-कणमेंकरतेहोतनवास।
तुमपरमशजततकेआगरहो।

ऐसादोहमकोहृदयप्रभो!
करुणा-पूररत,उदारिहो।
समदृजष्टट,सन्तुशलतमन,
ववेक,प्रज्ञा,तनष्टठा,श्रद्िाभीदो।

ओदीनबन्ुि!देदोऐसी
आध्याजत्मकआन्तरशजततहमें,
िमिनपरअंकुशरखपाये,
औ'प्रलोभनोंकोनष्टटकरे।

ईष्टया,ि कामुकता,लोभ,घृणा,
अजस्मता,क्रोिसेमुततकरो।
औ'ददव्यगुणोंकाप्रकाश,
हमसबकेअन्तस्मेंभरदो।

सबनामोंमें,सबरूपोंमें
प्रभुदशनिकरेंतुम्हाराहम।
इनसबकीसेवाकेद्वारा
करसकेंतुम्हारीसेवाहम

हमप्रततपलतुमकोयादकरें,
औ'गीततुम्हारेहीगाय!ें
मुहाँपरहोनामतुम्हाराही,
सवदितनवासकरेंतुममें।

शाजन्त-प्राथनिा

(सटेंफ्ांशंससआफअजस्ससी)

बनूाँमैंशाजन्तदूतूतेरा

घृणाकेकण्टकदूरूकरूाँ,
पे्रेमकेफूलवहााँबोऊाँ।
हिााँदहंसांहो,क्षमाकरूाँ।
हिााँहोफूट,ऐेतयलाऊाँ।

हिााँववभ्रम-सन्देहरहें,
आस्थाकासन्देशादूाँ।
ज्योततसेतमकोनष्टकरूाँ।
बाटााँकरसुख,दुःखदूरूकरूाँ।

क्षमाकरनेसेशमलतीक्षमा।
प्राप्तहोताकुछदेकरही।
तछपाशाश्वतीवनकाबिी,
मृतूयुकेआशलंगंनमेंही।

अतुःमैंकभीनहींसिोूाँ
ककोईमुझेसमझपाये,
ककोईमुझकिोोरिदे,
ककोईमुझकोप्यारकरे।

मुझेसुख-शाजन्तशमलेइसमें
ककमैंहीसबकोसमझसकूाँ,
दूसूरोंकोमैंिीरिदूाँ,
दूसूरोंकोमैंप्यारकरूाँ।

सत्य,पववत्रताऔरसिाुता,सरलताऔरववनम्रता,शुद्िआिरणऔरशुद्िररत्रएवं
मनोतनग्रहऔरतनष्टकामतापरआिाररतददव्यिीवनकाईश्वरहीलक्ष्यहै।अपनेइसलक्ष्यको
दृजष्टपथपररखतेहुएमनुष्टयअपनेववदहतकतव्ियोंकाभीपालनकरतारहताहै।इसलक्ष्यके
प्रततसततिागरूकरहकरश्रद्िाऔरववश्वासकेसाथईश्वरकास्मरणकरतेहुए,प्रत्येकवस्तु
मेंउनकादशनिकरतेहुएऔरभजततभावसेअपनेसभीकायोंकोसम्पन्नकरतेहुएआप
तनुःस्वाथतिाऔरसेवा,भजततऔरउपासना,ि◌ारणाऔरध्यानएवंतनरन्तरआत्म-जिज्ञासाद्वारा
अपनावववकासकीजिएऔरइसकेसाथहीदैवीअनुभवतथाआत्म-साक्षात्कारकीमदहमामयी
भागवतितेनाकीअवस्थाकीउपलजब्ि मेंस्वयंकोकृताथिकीजिए।

-स्वामीचिदानन्द

अनुक्रमणिका

प्रकाशकीय 3

ववश्व-प्राथनिा 4

शाजन्त-प्राथिना 6

१. महामन्त्र 9

२. सत्संगकीमदहमा 13

३. गुरुकृपा 17

४. स्वाध्यायकामनोवैज्ञातनकप्रभाव 21

५. रामायणमेंनैततकता 24

६. श्रीमद्भगवद्गीताकामर्म 28

७. श्रीमद्भागवतमेंभजततकास्वरूप 30

८. योग 33

९. वेदान्तकीशशक्षाएँ 38

श्री स्वामीचिदावन्द 42

१. महामन्त्र

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ि हरे कृष्ि कृष्ि कृष्ि हरे हरे।।

नामकीमदहमाएवंददव्यशब्दकीशजततववश्वकेसभीमोंमेंसुववख्यातहै।यहकहना अततशयोजततनहोगाककदहन्दू–ूमिमेंददव्यनामकीपररवतनिकारीएवंददव्यताकीओरलिैाने वालीशजततमेंप्रगाढ़श्रद्िा,ववशेषकरनाम-मदहमाकीपरम्पराको,इतनामहत्त्वपूणिस्थानप्राप्तहै ककददव्यता(आध्याजत्मकता)कीप्राजप्तहेतुयहववचिस्वयंमेंहीसम्पूणिहै,ऐसामानिाातेहै। महत्त्वपूणियोग-मागों(ज्ञान,कम,ि रिाएवंभजतत-योग)केअततररततिप-योग-ददव्यनाम-का अभ्यासभीतनश्ियिहीएकयोगहै।

अतएव,'मन्त्र'एकअक्षर-समूह हीहैीवैज्ञ ातनकरूपसे सूत्र बद्तिथातनरन्तरउचिारण (ि प)द्वाराशजततमान्ककयिााताहै;जिसरूपमेंयहददव्यनादपूणतिुःसिैतेनकरददयागयाहै। यहनादकाएकप्रतीकहै।इसभाताँतनादएकववशेषनाद-सूत्रप्रस्तुतकरनेवालानाद-प्रतीकोंका एकसमूहहै।इसकाबिोआत्म-साक्षात्कार-प्राप्तऋवषयोंनेप्रगाढ़आध्याजत्मकध्यानकेअनुभवमें अन्तज्ञानिद्वाराप्राप्तककयाहै।येप्रतीकमन्त्रोपदेशद्वाराअचिकारीसिाकोंकोददयेगयेीअब अपने िीवनमेंपववत्रकृतसंक ल्प,दृढ़तनश्ियिएवं ववश्वाससे उसअनुभ वकोसीवकरते हैंजिसे उनकेऋवषगुरुनेप्राप्तककयाथा।मन्त्रमेंऔरमन्त्रकेद्वाराउन्होंनेस्वि–ीवनमेंतिनाको अपनेपूणिवैभवकेसाथउददतहोतेअनुभवककयाहैऔरअन्तमेंयहितनाउनमेंऐसेव्याप्तहो िातीहैककवेउसिैतनाकेसाथएकहिोतेहैं।

आत्म-ववज्ञाननेनादकोहीब्रह्म-प्राजप्तकाप्रथमएवंसवोचितत्त्वमानाहैतथाइसकी संकल्पनाउसपरमसत्ताकेप्रथमप्रादुभािविअथवाप्रथमसम्बोध्यअशभव्यजततकेरूपमेंकीहैी अतनविनीयतथाऐजन्कितथाइजन्यिातीतसिानोंसेअसंलक्ष्यहै-**"यतो वाचो ननवतन्तते ेअप्राप्य**

[illegible]अशभव्यजततअथात् प्राजप्तहेतुनामएकअपरोक्षसिानहै।ऋवषलोगआद्य-नादकोप्रायुःब्रह्मकेसमकक्षहीसमझते हैं।नामउसनाद-तत्त्वसेहीअपनीशजततप्राप्तकरताहैजिससेउसकागठनहोताहै।

पुरातनकालमेंसामान्यिीवन-रीततइसप्रकारथीककलोगोंकेपासशास्त्र-प्रततपाददत तनयमएवं िाारकादृढ़तापूव कि पालनकरने तथामन्त्र-सिानाकेअभ्यासमेंदृढ़संक ल्पसे प्रवृतूत

होने केशलएपयाप्ततिसमय,योग्यताएवं दीघायिु थी;ककन्तु इसकशलयुग मेंपूर ाढिाँ ाहीबदलगया है।आेमानवअल्पिीवीहै।उसकीसंकल्प-शजततक्षीणहै।उसकीशारीररकशजततयााँअतीतकाल केपूर्विोंकीअपेक्षाअत्यन्तसीशमतएवंन्यूनहैं।अपनेिीवनकेपोषणहेतुवहभोिनपरबुरी तरहतनभररहै।इसभोिनकेशलएउसेअकाल,सूखा,बाढ़,महामारीएवंअभावसेपीडड़तसंसारमें अहतनशिश्रमकरनापड़ताहै।उसेअवकाशकहााँहै?उसमेंसामर्थयिकहााँहै?मनएवंइजन्रयोंका दासहोनेकेकारणवहअसहायरूपसेभौततकसंसारकेमायावीअथिप्रलोभनकारीइवषयोंकेभवाँर मेंइिरसेउिरभटकतारहताहै।

प्रािीनकालकेतत्त्वज्ञानीऔरकरुणापूणिऋवषयोंने,िोत्रत्रकालदशीथे,जिन्हेंभूत,वतिमान एवं भववष्टयकाज्ञानथा,कशलयुग केआगमनकेसाथयहााँ परव्याप्तहोने वालीअवस्थाओं का अवलोकनकरशलयाथा।वेकरुणाससेवववतहोगये।

यदददहमइसबातपरततनकवविारकरेंककऋवषनारदकेतनम्नांककतसाशभप्रायप्रश्नकरने परसृजष्टटकतािब्रह्मािीनेस्वयंमहामन्त्रतथाउसकीववचिकाप्रततपादनककयाथातोआितनक युग केशलएउसकीअद्भुत उपयोचगतासहिहीअनुभ वकीिासकतीहै।नारदने प्रश्नककया: "भगवन्!्कशलयुगमेंलोगिमि–भाव-रदहतहैं,उनमेंयोगकीक्षमतानहींहै,वेअचिकारहीनहैं, पूण ति यासद्गुण ोंसे रदहतहैं,दोष-युत तहैं,ककसीभीआिार-ववचिकाअनुस रणकरने मेंसमथि नहीं हैं।ऐसीदशामेंबिककसमस्तमानवइतनेअिोपतनकीअवस्थामेंहैं,भगवत्साक्षात्कारकैसेहो सकताहै?िीवकोिन्म-मरणके बन्िनसे मुत तकरने काउपायतयाहै?इसकष्टटके िक्रसे कैसे तिकािाये?"इससिी तथाप्रसंग ोचितप्रश्नकेउत्तरमेंब्रह्मािीने कहा:"यहववचिहै। महामन्त्रकाकीतिनकरो।इसमहामन्त्रकेकीतिनमेंतनरन्तरमग्नहोिाओ।इसकेशलएकोई तनयमनहींहै।इसकेशलएकोईयोग्यतानहींिादहए।इसेसभीगासकतेहैं।यहऐसामन्त्रहै।िो अन्य ककसी भी योग-मागि द्वारा प्राप्य भगवत्साक्षात्कार अथवा समाचि की उच्चावस्था को प्राप्त कराताहै।"

मन्त्र-शसद्चिकेदोमूलमागिहैं।इनदोनोंमेंहीश्रद्िाएकउभयतनष्टठववषयहै।अन्तर के वल इतना ही है कक एक तो शुद्ि रहस्यमय अशभगम है जिसमें दीक्षक्षत सािक यह िान लेत ा है ककयहएकरहस्यपूणिददव्यसूत्रहैजिसकािपकरनेपरवहअन्तत:भागवतिेतनाकोप्राप्त करायेगा।इसे िानलेने परवहअपनादृढ़तनश्ियएवं अपनीसंक ल्प-शजततमन्त्रपरहीप्रवृत्त करताहैऔरइसप्रथमोततसंकल्पकेसाथवहसािनाआरम्भकरताहै।इसमें'इच्छा'काअंश होताहै।अन्ततुःइसइच्छा-शजततकेपररणामस्वरूपएवंतनरन्तरतथाअटूटमन्त्रिपकेफलस्वरूप

वहआत्म-साक्षात्कारप्राप्तकरलेताहै।ववद्यारण्यएवंसमथिरामदासैसेसिाकोंनेएवंवविमन्त्र-शसद्चिप्राप्तकीथी।

दूसूरामागिशुद्श्रिद्ाएिवंभजततकाहै।यहभाव-प्रिानहै।सिाकमन्त्र-शसद्चिकेववज्ञान तथायथाथि ववचिपरअचिकतनभरि नहीं करता;प्रत्युत् ् यहलगभगउसकेभावकीहीआत्मीयता होतीहैैमन्त्रकोशीघ्रपूर्णितनरूपमेंप्रस्फुदटतकरतीहै।यहााँभततअपनीइचछा-शजततपर अचिकतनभरिनहींकरता;प्रत्युत्अपनेहृदयकेभाव,भावकीगहनताएवंपे्रमपरतनभरिकरताहै। भगवान् केशलएउसकेअन्तुःकरणमेंइतनापे्रम होताहैककवहकहताहै-"प्रभु केमिुर नामके उचिारणमात्रसे मेरे समस्तपापक्षण-भरमेंलिायगें औरमुझे े परममोक्षकीप्राजप्तहो ायेगी।"भारतकेउत्तरकालीनअचिकतरकवव-सन्तोंकाकुछऐसाहीववश्वासथा।

एककथाहैककककसप्रकारएकव्यजततअपने असाध्यरोगसे मुत तहोने केशलएसन्त कबीर तक पहुाँनिा िाहता था। लोगों का ववश्वास था कक कबीर की के वल प्राथनि ा अथवा इचछा ही रोगहरहै।कबीरघरमेंनहीं थे। उनकालड़काकमालदासवहााँ था।आध्याजत्मकशसद्चियोंमें कमालदासअपनेवपतासेलेशमात्रभीकमनथा।िबपीडड़तव्यजततउसकेपासपहुाँिातौकमाल ने कहा-"तीनबारराम-नामबोलो,तुम ठीकहोिाओगे। "उसव्यजतततने ववश्वाससे ऐसाककयाऔर तत्कालहीरोगमुजततकािमत्कारहोगया।व्यजततप्रसन्नचित्तववदाहोगया।कबीरदासकेआनेपर कमालदासने ददव्यनामकेअद्भुत िमत्कारकीसारीकहानीअपने वपताकोसुन ायी।कबीरबहुत कुरुद्हुिए।उन्होंने लड़केकोफटकारा-"तुम मेरे पुत्र कहलाने योग्यनहीं हो;तयोंककतुम मेंववश्वास कीकमीहै।व्यजततकोउसके दुः खसे मुत तकरने के शलएिभगवन्नामकाएकबारउचिारणही पयाप्तिथातोउससे तीनबारबुल वाने कीतयाआवश्यकताथी?"यहकथाहमेंकेवलयहबिो करानेकेशलएहैककककतनेगहनववश्वासऔरभावकेसाथभततकीददव्यनामतकपहुाँिथी। महामन्त्रषोिशददव्यनामोंसेयुततहै-

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ि हरे कृष्ि कृष्ि कृष्ि हरे हरे।।

वतिमानयुगमेंरहनेवालेहमलोगोंकेशलएइसमन्त्रकामहत्त्वएवंमदहमाइसतर्थयमें तनदहतहै।इसयुगमेंमानवताकीजस्थततपरदयापूवकिवविारकरतेहुएयहमन्त्रअन्यमन्त्रोंमें पालनीयसभीतनयमों,ववचि-वविानों,बन्िनोंएवंव्रतोंसेमुततहै।यहमहामन्त्रवैजश्वकमन्त्रहै जिसका कोई भी व्यजतत ककसी भी जस्थतत में इचछानुस ार अभ्यास कर सकता है। महामन्त्र मानो यिघोषकरताहै-"हेमानव,उठो।तुमतनराशतयोंहोतेहो?मेरेरहतेतुम्हारीकुछभीहातननहीं

होगी।तुम् हारेशलएआशासदावतमि ानहै।मैं तुम् हेंसफलता,ऐश्वय,िसुख ,परममोक्षएवं आनन्द प्रदानकरूाँगा।"

हमारेशलएइसअनुपमस्वरूपवालेमहामन्त्रकाअथितयाहै?इसकाआशयहै—यहएक ऐसा मन्त्र है िो सबका समान रूप से शमत्र है, सबका समान रूप से उद्‌रिक है तथा जिसका उचािरणपुरु षहोयास्त्री,वृद्ध िहोअथवायुव ा,उचिहोयातनम्न-सभीकरसकते हैं।इसमेंशलगं , िाित,िम,ि वणि अथवाराष्टट्रीयताकाकोईप्रततबन्‌निहीं है।इसमहामन्त्रकािपददवसहोया रात्रत्र,प्रातुःहोयासायं,गिोूशलहोयामध्याह्न-ककसीभीसमयककयािासकताहै।ककसीभीकायि मेंसंलग्नरहकरआपइसकाअभ्यासएवंपिकरसकतेहैं।यहमहामन्त्रहरसमयसबपर समानरूपसे अपने आशीवािद कीवृजृ ष्टटकरतातथासुख एवं आनन्दप्रदानकरताहै।अतएव,सोलह नामवाले इसददव्यमन्त्रकाउचािरण(िप)आिहीसे आरम्भकरदीजिए,इसे तनयमपूव कि कीजिए,पूणिववश्वासतथाभजततसेकीजिए।इसकापाठकीजिएयाइसेमिुरुस्वरमेंगाइए।मैं आपसे करबद्‌िहोकरप्राथनि ाकरताहूाँककआपप्रततददनतनयमपूव कि इसमन्त्रकागानकरें। आपकिीवनकेप्रत्येकक्षेत्रमेंमांगल्य,अभ्युदयएवंसफलताप्राप्तहोगी।आपज्ञान,शजतत, शाजन्त,प्रिेरसुखएवंमोक्षकोप्राप्तकरेंगे!

२. सत्संग की मदहमा

यददआत्मि͂तनाकेउन्मीलनहेतुसत्संगहीपरमकारणहैतोगुरुकेसमीपआनेवाले
प्रत्येक सिाक को अपनी सािना में अध्यात्म-पथ पर एक ही प्रकार का प्रकाश तथा फल तयों नहीं
प्राप्त होता? भगवान् कृ ष्टण ने द्वापर युग में अवतररत हो कर अलौकिकक भागवत िीवन यापन
ककया।वे भगवान् केप्रकटरूपथे। िोलोगउनकेसाथतनरन्तरवविरणकरते रहे,जिनकेसंग वे
रहे,जिनकेसाथवे वाताि तथाव्यवहारकरते रहे,उनमेंसे कुछऐसे थे िोउनकेभागवतस्वरूपसे
पररचितथे।वेभाग्यशालीबने।कुछऐसेभीथेिोअपररवततततरहे,वेश्रीकृष्टणिीकेद्वारा
ववरचितमहायुद्मेंववनष्टटहोगये।यहअद्भुतवस्तुतयाहै?एकशब्दमें,यहवस्तुउपगमनहै,
ृविकाउपगमन।यहीइसतथ्र्यकातनणाियकहैककजिज्ञासुकासत्संगसाक्षात्कारमेंसफलहो
िाताहैअथवाअफलप्रदहोव्यथिहोिाताहै।कारण,कौरविबकृष्टणकेपासपहुँितेतोउनकी
पहुँिदोषदृजष्टटपूण ि थी।भगवान् केसभीगुण ोंकेप्रततवे अन्िे बनगयेथे। उनकीसम्पूण ि दृजष्टट
आभासमान दोषों पर ही के जन्ित थी। व्यास भगवान् महाभारत की एक घटना द्वारा दुयु िोन एवं
युचिजष्टठरकेव्यजततत्वकीआन्तर-रिनाकोयुगपत्प्रकटकरतेहैं।

भगवान् कृष्टणने इनदोनोंकोएककायि केशलएप्रेररव षतककया।उन्होंने यचिजष्टठरकोिो
कायि सौंपा,वहथा-"तुम िाओऔरएकऐसे व्यजततकोखोिने काप्रयत्नकरोिोसवथि ुः
गुण रदहतहो,सवथि ादोषपूण ि हो।"भगवान् ने दुयु िोनकोअलगबुल ाकरकहा-"तुम एकऐसे
व्यजततकोढूाँढ़ने कायत्नकरोिोगुण ोंसे पूण ि हो,जिसमेंकोईभीदोषनहो।"दोनोंने हीअपने-
अपने कायि हेतु प्रस्थानककया।कुछकालोपरान्तदोनोंहीश्रीकृष्टणकेपासलौटआयेऔरउनसे
पृथ् कपृथ् कशमले। श्रीकृष्टणने दुयु िोनसे पूछ ा-"तयातुम आगये?तयाककसीव्यजततकोअपने
साथलाये ?जिसव्यजततकोखोिने तनकले थे, वहकहााँ है?"उत्तरपररिाध्यानदीजिए।दुयु िोन
ने कहा-"मनैं ऐसे व्यजततकोयथासम्भवखोिने काप्रयासककयािोसवगिु ण सम्पन्नहो,जिसमें
कोईभीदोषनहो।मनैं यथाशतयप्रयत्नककया,सवत्रि गया;परन्तु तनदोषव्यजततमुझे कोईनहीं
शमला।सभीअवगुणोंसेओत-प्रोतहैं।ककसीमेंयददएकगुणहैतोअनेकअवगुणहैं।पयाप्तिखोि
केपश्िात्मनैंयहीपायाककसवथिातनदोषव्यजततमेरेअततररततअन्यकोईभीनहींहै।मैंहीवह
व्यजततहूाँ,अतुःमैं आपकेपासआयाहूाँ।आपकोमुझ से िोभीप्रयोिनहो,पूण ि कीजिए।"श्रीकृष्टण
मुस् कराकरबोले- "बहुतअचछाएकसवगिु ण सम्पन्नतथासवथि ातनदोषव्यजततकोदेखकरमुझे े
वास्तवमेंप्रसन्नताहुईहै।"

युचिजष्टठरकेआनेपरश्रीकृष्णनेपूछा-"तुम्हाराव्यजततकहााँहै?"युचिजष्टठरनेीउत्तर ददया,वहअमरहोगया।इससेउनकेव्यजततत्वकाज्ञानहोताहै।उन्होंनेकहा-'भगवन्,्ऐसा मनुष्टयोतनकृष्टदुरािारीहै,जिसेसंसारघोरपापीकहताहै,उसमेंभीअनुकरणीयगुणपायेिाते हैं,अचछेलक्षणहैं।अतएवयथासम्भवप्रयत्नकरने परभीमैं अवगुण ोंसे पूण ि व्यजततकोनहीं खोिसका।प्रत्येकमेंकोई-न-कोईसद्गुणहै।सवथािदोषयुततव्यजततढूाँढ़तनकालनाअसम्भवहै। मनैंआत्म-ववश्लेषणककयातोपतिालाककमुझमेंइतनेअवगुण,अपूणतिाएाँऔरदुव्युयसिनहैंककमैं अपने से अचिक उपयुत त व्यजतत उपजस्थत करने के शलए पा न सका। मैं ही एक ऐसा व्यजतत हूाँ जिसमेंआपकीदीहुुईपररभाषापूर ीउतरतीहै।अतुःमनैं स्वयं कोआपकेसमक्षउपजस्थतककयाहै।" उपगमनकीयेदोववचियााँहैं।युचिजष्टठरकाउपगमनएकऐसेजिज्ञासुकीभााँततथाजिसकीदोष-दृजष्टकालक्ष्यबाह्यनहोकरअन्तरावलोकनकाहोताहै।दोषतनकालनेकीप्रववृत्तमानव-प्रकृततमें वासकरनेवालासवािचिकववनाशककीटहै।परन्तुसािकोंकीएकअपनीहीकोदटहोतीहै।सत्संग सेलाभाजन्वतहोनेकेशलएमहत्त्वपूणितत्त्वयहहैककमनुष्टयकास्वभावदोषढूाँढ़नेकानहो।

आपकेव्यजततत्वकापोषण,संविनिएवंववकासउनतत्त्वोंपरआिारतहैजिनकाछायाचित्र मनमेंहोताहै।यहएकमनोवैज्ञातनकतर्थयहै।यददआपसौन्दयिकाचिन्तनकरतेहैंतोआपका संव िनि पूण ति ा,सौन्दयि औरशाजन्तकेसमरूपहोताहै।आपयददहमालयकेप्रखरशीतकासदा चिन्तनकरेंतोदहमकासौन्दयिआपकेशलएसमाप्तहोिायेगा।यददआपराकाशशशकेसौन्दयिको देखने केसाथ-ही-साथउसकेदूसू रेपक्षअथात्् उसकेमध्यवतमि ानकाले िब्बे काचिन्तनकरेंतो आपकेहृदयएवंमानस-पटलपरउसकाअशसतरूपहीरहिायेगा,पूणिि्र्किआभानहीं।अतएव यहदोषतनकालनेकीप्रकृततमहत्तमबािाहै;तयोंककयहसािककोसदा-सविदाकेशलएउसकी तनम्नप्रकृततसेबााँिदेतीहैऔरिबवहगुरुकेिरणारववन्दमेंितिाहैअथवाआध्याजत्मकपथ मेंप्रवेशकरताहैतबवहदोषोंकेतनम्नवैषतयर्किवनसेबााँिनेवालेअपनेमनकेइसस्वभाव कोअपने साथले िाताहैऔरइसप्रकारकेमनकेद्वारावहप्रकाशप्राप्तकरने केबदले अन्िकारकाहीआशलंगंनकरताहै।

भारतवषि कीपुर ानीसंस् कृततमेंसत्संग केमहत्त्वकोअथात्् गुरु अथवाककसीज्ञानीसन्तके िरणारववन्दोंमेंबैठनेको'उपतनषद्'तथा'उपासना'शब्दोंसेअशभव्यततककयागयाहै।उपतनषद्का अथि है'समीपबैठ ना'-ज्ञान-ज्योततसे ववभाशसतव्यजततकेपासबैठ ना,जिससे हमभीउससे वहज्ञान प्राप्तकरसकेंजिससेउसेप्रकाशशमलाहै।'उपासना'काअथिहैपूिाअथवाभगवत्–स्तुतत।संस्कृत मेंइसकाशाजब्दकअथिहै-समीपआसनग्रहणकरना।यहआपजिसपरमउपास्यदेवसेप्रकाश प्राप्तकरनािाहतेहैं,उसकेसाथतनकटसम्पकिस्थावपतकरनेकीआवश्यकताप्रकटकरताहैऔर इसीभााँत'सत्संग'भीन्यूनाचिकरूपमें,एकहीअथिअशभव्यततकरताहै।सत्संगकाआशयहै-

'सत्यकासंगकरना।'एवंववि,'उनगुरुअथवासन्तकीसंगततमेंरहना,जिन्होंनेअपनीतनाको परमतथिारमसत्यकेसाथएकलय(एकताल)करशलयाहै,िोपरमसत्य-स्वरूपबनिुके हैं।' शास्त्रकहते हैं-"सत्संग हीइसकशलयुग मेंसवोत्कृष्टवस्तु तथामाया-सागरकोसन्तरणकरने का एकमात्रसिानहै।"सत्संगउसेप्राप्तहोताहैिोअहंकापररत्यागकरदेताहै;तयोंककस्वयंको िविअथवाक्षिव्यजततकहनासत्यनहींहै।जिसक्षणमनुष्टयइसकाउत्सगिकरताहै,उसीक्षणसे हीउसकासत्यसे संग प्रारम्भहोिाताहै।उसकेशलएसत्संग आरम्भहोिाताहै।सत्संग की महत्ताअपने तनम्नअहंकात्यागतथाअपने अन्दरवतमि ानतथाबाहरसद्गुरु तथासन्तकेरूपमें प्रकटसत् केसाथसंग ततहै।मनुष्ट यकासबसे बड़ाशत्रु अहंकारहै।व्यजततकोअज्ञानऔरसंस ार सेबािँरखनेवालाप्रत्येकपदाथिअहंकारकेववशभन्नरूपकेअततररततअन्यकुछनहीं।सत्संग ऐसीअलौककककप्रववधिहैजिससेअज्ञानकापूणरूिपेणउन्मूलनकरददयािाताहै।

एककथाविाकककीरािभवनमेंकथाकरनेकीकहानीइसप्रकारहै-रािाकोसंसारसेमुतत होनेकीउत्कण्ठाहुई।उसनेसोिा,'तनस्सन्देह,कथाविाकमुझिेन्म-मृत्यु,शोकआददकेिक्रसे मुत तकरसकताहै।मेर ामनअशान्तहै।कदाचित् वहीमुझे ज्ञानदेगा।'अगले ददनरािाने कथाविाकसे कहा-"मुझे े ज्ञानिदहए।मुझे अज्ञानऔरशोकसे बाहरतनकलने कारहस्य बतलाइए।"कथाविाकभयसेकापँनेलगा।वहउभयापवत्तमेंपड़गया।वहसमझनसकाककतया ककयािाये!रािानेकहा-"यददआपमुझेसंसारसेमुततनहींकराओगेतोआपकेइसअस्थायी कायिकेसाथ-साथआपकाशशरभीिातारहेगा।"कथाविाकखखन्नमनसेघरपहुँिा।उसकीएक मेि ाववनीपुत्र ीथी।उसने पूछ ा-"आपिोइतने ववषादयुत ततयोंहैं?"कथाविाकबोला--"मेरे बच्िे, े मेरेअजन्तमददनसमीपआगयेहैं।रािानेमुझेअसम्भवकायिकरनेकोकहाहै।वहमुझसेऐसा ज्ञानदेनेकोकहरहाहैिोउसेसंसारसेमुततकरदे।मुझेतयामालूमहै?मुझेस्वयंहीउसका ज्ञाननहींहै।मैंतोकेवलभाषणहीदेताहूँ;औरवहभीइसगृहस्थीकोिलानेकेशलए।यददमैं कलरािाकोवहज्ञाननहींदूँगातोवहमेराशशरकटादेगा।"लड़कीनेकहा-"चिन्तामतकररए। आपकलियेंऔररािासेकहदेंककउत्तरदेददयािायेगा।"वहबोला-"ठीकहै।"िूबतेकोततनके कासहाराशमलगया।आठ-दशवषीयाउसलड़कीने कहा-"कलमुझे रािमहलमेंअपने साथले िलियेगा।"अगलेददनवपताअपनीपुत्रीकेसाथरािमहलमेंपहुँिा।लड़कीनेवपताकोप्रततददनकी भाताँ तकथाप्रारम्भकरने कोकहागया।कथाप्रारम्भहुएअभीपन्दरहशमनटभीनहुएहोंगे कक रािमहलकीशाजन्तक्रन्दनसेभंगहोगयी।सभीआश्ियिमेंपड़गयेककक्रौनक्रन्दनकररहाहै। वहलड़कीिोरोंसे ववलखरहीथी-"मुझे े बन्िनिमुत तकरो,मुझे े बन्िनिमुत तकरो।"उसने स्वयं ही एक स्तम्भ को कस कर पकड़ रखा था। सबने उसे स्तम्भ से छु ड़ाने का प्रयास ककया; परन्तु वे असफलरहे।वहस्तम्भकोदृढ़तापूव कि पकड़े हुएथीऔरचिल्लारहीथी-"मुझे बन्िनिमुत तकरो, मुझेबन्िनिमुततकरो।"रािानेकुरुद्िहोकरकहा-"तुमकैसीमूखिलड़कीहो!तयािाहतीहो?

तुमस्वयंहीस्तम्भकोदृढ़तासेपकड़करखड़ीहोऔरमुततकरनेकेशलएहमसेकहरहीहो।"
तत्कालहीलड़कीठहाकामारकरहाँसपड़ी।रािाने पूछ ा-"तुम हाँसतयोंरहीहो?"लड़कीने उत्तर
ददया-"मैंइसशलएहाँसरहीहूाँककयहीकायिआपमेरेवपतािीसेकरनेकोकहरहेहैं।आपनेराज्य,
भवन,सम्पवत्त,पदआददकोस्वयंहीपकड़रखाहैऔरआपमेरेवपतािीसेआपकोउसबन्िनिसे
मुततकरनेकोकहरहेहैंजिससेआपस्वयंहीशलपटेहुएहैं।"रािालड़कीकेउत्तरसेसन्तुष्टहो
गया।उसने शशक्षाप्राप्तकीककमनुष्ट यदूसू रेकेद्वाराबन्िनिसे मुत तनहीं होसकता।उसे स्वयं ही
मुततहोनाहै।जिससेवहचिपकरखाहै,उसकोउसेछोड़नाहै।अतु:यहसािकपरहीतनभिरहै
ककवहअपनीतनम्नसत्तासेसम्बजन्तिवस्तुकीआसजततकात्यागकरे।यददवहउसआसजतत
कोत्यागदेताहै,तोसत्संगतत्कालहीसफलहोताहै।सत्संगसेलाभ-प्राजप्तहेतुतनम्नप्रकृतत
कोररततबनानापूवापेक्षक्षतहै।

३. गुरु-कृपा

हमारिमशिास्त्रहमेंयहबतलातेहैंककगुरु-कृपाएकऐसाअद्भुतरहस्यमयतत्त्वहैिो
सिाकिोिीवनके परमश्रेयस् आत्म-साक्षात्कार,भगवद्-दशनि अथवामोक्षकीखोितथाउपलजब्ि
मेंसक्षमबनाताहै।शशष्ययसिनाकरेअथवानकरे,वहअचिकारीहोअथवाअनचिकारी,गुरु -कृपा
आध्याजत्मकक्षेत्रमेंप्रवतीसभीप्रसामान्यवविानोंकोउत्सािददतकरउसे(शशष्यको)भावातीत
आनन्दमेंलेिातीहै।यददहमशास्त्रोंपरववश्वासकरेंतोहमकहसकतेहैंककिीवनमेंपूणतिा-
प्राप्त्यथिगुरु-कृपाकेअततररततअन्यकोईभीवस्तुअपेक्षक्षतनहींहै।

इसकेसाथहीयददयहतर्थयभीसत्यहैककगुरुदयाकेअसीमसागरहैंतथावेसमस्त
जिज्ञासुओंपर;िाहेवेअचिकारीहोंअथवाअनचिकारी,योग्यहोंअथवाअयोग्य;अपनीकृपाकी
वृजृष्टटतनरन्तरकरतेरहतेहैं।यददऐसीबातहैतोअबतकहमसभीआप्तकाम,आनन्दमयबन
िुकेहोते।परतयाऐसाहै?नहीं।हमेंयहदेखकरखेदहोताहैककहमफाँसगयेहैं।हममें
अज्ञानताहै,भ्रमभीवतमिानहैतथाहमअपनीहीतनम्नआत्माद्वारािीवनकेप्रत्येकमोड़पर
प्रवंचितहोरहेहैं।

त्रुदटकहाँहै?इनमेंसेकौनअसत्यहै?यददउपयुततिदोनोंहीकथनसत्यहैंतथावपशशष्य
अद्यावचिबहुत-कुछपाचथविहीबनेहुएहैंतोकहींपरअन्यकुछभूलहोगी।वह'अन्यकुछ'तया
है?हमशास्त्रोंकोअसत्यकहने किृष्ट टतानहीं करसकते, परसाथहीहमयहभीदृढ़तापूव कि नहीं
कहतेककगुरुकरुणामयनहींहैंतथावहहमपरअपनीकृपा-वृजृष्टटनहींकरते।

यदद हम इस पर चिन्तन करें तो हमारे समक्ष कु छ ऐसे तर्थय उपजस्थत होते हैं जिन पर
गम्भीरतापूवकिववविारकरनेकीआवश्यकताहै।तनु:सन्देहगुरु-कृपाएकऐसीददव्यशजततहैिो
िेतिनप्राणीहीनहीं,तनिींवपाषाणतककोअसीमसजचिदानन्दमेंरूपान्तररतकरसकतीहै।इस
कथनमेंतथाइसतर्थयमेंककगुरुसदाहीदयापूणिहोतेहैं,ककंचिन्मात्रभीअततशयोजततनहींहै।
तथावपगुरु-कृपाकेवलप्रदानहीनहींकीिाती,दीहीनहींिाती;अवपतुग्रहणभीकीिातीहै।इसे
ग्रहणकरहमअपनेकोअमरबनातेहैं,अपनाददव्यीकरणकरतेहैं।

एकउदारदानदाताअपररशमतदानदेसकताहै,ककन्तुसंसारकीसमस्तसम्पवत्तभीउस
अककंनिकेशलएतनरथकिहीहैिोइसमहान्अवसरकालाभनहींउठातातथाप्रापकनहींबनता।
इसीशलएप्रभु यीशु ने कहा:"मागाँ ेगे, तोतुम् हेंदेददयािायेगा;ढूाँढ़ो,तोतुम पाओगे; खटखटाओ,तो

तुम्हारेशलएखोलददयिाायेगा?"ऐसीबातनहींककभागवतदानशीलताका,ददव्यकृपाका,गुरु-कृपाकाकोईअभावथा।प्रकाशकीकमीनथी;ककन्तुएकवविानथाककहमेंमागाँनाहै,हमेंढूाँढ़ना हैतथाहमेंखटखटानाहैऔरऐसाकरकेहमेंउसेग्रहणकरनेकेशलएउद्यतरहनाहोगा।यददयह उपजस्थतहैतोगुरु-कृपासभीप्रकारकेआश्िियिकरतीहै।यहहमारेअन्दरप्रवादहतहोकरहमें उन्नतकरअमरत्व,शाश्वतप्रकाशतथाअसीमआनन्दकेउचितमप्रदेशमेंपहुाँिादेतीहै।

तबहमउसकृपाकोकैसेप्राप्तकरसकतेहैं?उसकोग्रहणकरनेकोउद्यतरहनेकेशलए हमेंकैसाव्यवहारकरनिाादहए?शशष्टयत्वकेद्वारा,तयोंककगुरुतथागुरु-कृपाकाप्रश्नशशष्टयके सम्बन्िमेंहीउठताहै।िोशशष्टयनामकश्रेणीमेंनहींआते,ऐसेलोगोंकेशलएऐसानहींकहागया ककउन्हेंदया,करुणा,कृपाअथवाआशीवादिनहींप्रदानककयिाायेगा,ककन्तुइसमेंगुरु-कृपाका उल्लेखनहींहै।िबमैंगुरु-कृपाकहताहूाँतोयहकुछववशेषवस्तुहै,कुछरहस्यमयवस्तुहै,कुछ ऐसीवस्तुहैिोनकेवलइसलोककीहीकोईवस्तुप्रदानकरतीहै,वरंविहसवोचिवस्तुभी प्रदानकरतीहैजिसकेशलएयहााँयहमानवर्–न्महुआहै;तयोंककभततकोसन्तकाआशीवादिशमल सकताहै,वहउनकीकरुणाकाभीभागीदारबनसकताहै,ककन्तुगुरु-कृपाकीभेंटप्राप्तकरनेके शलएपहलेहमेंशशष्टयबननाहोगा।

व्यजततशशष्टयकैसेबनसकताहै?यहबातनहींहैककगुरुशशष्टयकोस्वीकारकरताहै, वरंशिशष्टयकोपहलेगुरुकोस्वीकारकरनाहोताहै।यददशशष्टयसवप्रिथमअपनेकोशशष्टयकारूप देिलताहैतोइसबातकाकोईमहत्त्वनहीं रहताककगुरु कहे:'हा,ाँ तुम मेरे शशष्टयहो'अथवान कहे।वहगुरु-कृपाकाअचिकारीतथाविैअध्यथकिबनिाताहै।

तत्पश्िात्हमेंगुरु कीसेव ाकरनीहोतीहै।यहसेवाहीवहरहस्यमयवस्तु हैिोहमारे तथागुरु-कृपाकेप्रभावकेमध्यवतमिानअवरिोकिकोराशायीबनिाालतीहै।अहंकारहीसबसे बड़ाअवरिोकहै।हमारेआत्माशभमानके,पूवर्–तनशमतिािरणाओंकेप्रािीनसमूहद्ववतीयभीषण अवरिोककाकामकरतेह।ैंइनसबकेशलएसेवाएकप्रभावकारीअवरिो-उन्मूलकहै।

एकबारएकगुरु ने अपने शशष्टयकीपरीक्षालेने केशलएउसे अपने पैर ोंसे कमरदबाने का आदेशददया।गुरुनेकहा:"मेरीकमरमेंपीड़ाहोरहीहै।मेरेवप्रयशशष्टय,तयातुमअपनेपैरोंसे उसेदबाओगे?"

शशष्टयने कहा:"महारिा!मैं आपकेपववत्रशरीरपरअपने पावाँ कैसे रखसकताहूाँ?यह घिन्यपापहै।"

गुरु नेउत्तरददया:"ककन्तु तयातुम इसभाताँ तमेर ीआज्ञाकाउल्लंघ नकरमेर ीजिह्वापर अपनेपैरनहींरखरहेहो?"

व्यजततकोइसउदाहरणसेशशक्षाग्रहणकरनीीादहए।अपनेगुरुकीआज्ञाकेपालनमें शशष्यकोअपनीबुद्चिकाप्रयोगनहींकरनिाादहए।उसेिषूटटतात्यागदेनीीादहएतथागुरुके प्रततसचीितथाचिरस्थायीभजततकाववकासकरनिाादहए।व्यजततकोप्रत्येकसम्भवउपायसेगुरु कीसेवाकरनीीादहए।त्रबनाककसीदहिककिाहटकेउनकीआज्ञाओंकातनु:संशयपालनकरना िादहए।

गुरुकीशशक्षाओंकायथासम्भवपालनकरनेकाप्रयासहीउनकीसेवाहै।उनकेउदात्त उपदेशोंपरहमेंअपनीिवनकातनमाणिकरनाहै।आत्मासेस्वेचछापूवकिगुरुकीआज्ञाओंका पालनकरनाहीअपनेक्षिुसामर्थयानिुसारउनकेउपदेशोंकेअनुसरणकारहस्यहै।भूलुजण्ठतहोउन्हें नमस्कारकरनेकीतत्परतारखना,उन्हेंअपनामागदिशिकस्वीकारकरनातथाउनकीआज्ञाओंका पालनकरनाहीसवाचििकआवश्यकवस्तुहै।

गुरु,उनकीकृपातथाउनकेकायिकेववषयमेंिविार-समूहहमारेअन्दरककसी-न-ककसी रूपमेंप्रवेशकरगयेहैं,उन्हेंभीहमेंअपनेअन्दरउन्मूलनकरनाहै।यहकष्टसाध्यकायिहै,पर इसे करनाहीहोगा;तयोंककशशष्यकेशलएगुरु कास्वरूपमानवनहीं है।हमेंगुरु केमानवीयपहलू कीओरसे अपने नेत्र मूदूँ लेने िादहएतथाउनकेददव्यस्वरूपकीओरहीीागरूकरहनिाादहए। इसदशामेंहीहमगुरु-कृपाकेभागीदारबनसकेंगेीककहमेंतनम्नमानवसेमानवातीतददव्यता मेंरूपान्तररतकरदेगी।िबतकहमअपने कोपाचथवि प्राखणयोंकेसभीअभावों,पररसीमाओं तथा कमिोररयोंसे युत तमानव-प्राणी,पाचथवि प्राणीसमझते हैंतबतकहमगुरु किेरमददव्यस्वरूप किीत नामेंपूण ति :प्रवेश नहीं करसकते। अतु:हमारीसिानाददव्यिैत नाउत्पन्नकरनातथा अपनीमानवीयिेतनाकोतनकालफेंकनाहोनिीादहए।यददहमयहाँददव्यतनयततसेयुततददव्य प्राणीकेरूपमेंरहनाआरम्भकरदेंतोगुरु-कृपातथागुरुकाददव्यस्वरूपशनै:-शनै:अशभव्यतत होनेलगेगा।

अतु:सवोत्तमबातयहहैककहमयहसब-कुछगुरुपरहीछोड़दें।'मैंनहींिनिताककमैं शशष्यहूँअथवानहीं।अतु:हेदयाऔरकरुणाकेसागर!कृपयामुझेयोग्यशशष्यबनाय।ेमुझमेंवह अभीप्साउत्पन्नकरेंमिुझेशशष्यबनादेतथामुझेस्वेचछासेआज्ञाकारीबननेकीभावनाप्रदान करे।आपद्वारातनददिष्टआदशि केअनुकू लअपने कोढालने केप्रयासमेंमेर ीसहायताकरें।'यह

हमारीतनरन्तरप्राथनिाहोनिीादहए।इसकेद्वाराहीहमगुरु-कृपाकोअपनीओरआकवषतिकर सकेंगेतथाअपनिीवनसफलबनासकेंगेऔरइसप्राथनिाकोकरनेकाउपायहै-सचािशशष्टय बननेकायथाशतयप्रयासकरना।

४. स्वाध्याय का मनोवैज्ञातनक प्रभाव

मिशिास्त्रोंमेंउनमहवषयोंकेउद्गारहैंिभगवान्केसीसम्पकिमेंआयेऔरउनसे भौततकपदाथोंकेज्ञानकीअपेक्ष ामहत्तरज्ञानप्राप्तककया।शास्त्रोंकेरूपमेंउन्होंने उसीज्ञानको ददयाहै।उपतनषद्आददशास्त्रोंमेंवे सभीअनुभ वऔरभावानुभू त तयााँ संक शलतहैंिउन्होंने ध्यान तथाअतीजन्यि-अवस्थामेंप्राप्तकीथीं। इनग्रन्थोंमेंउनप्रिीनऋवषयोंकेअनुभ वोंकाअशभलेख न हैजिन्होंनेअपनेसुतनजश्तिप्रयत्नद्वारास्वयंकोअध्यात्मकीउचितरभूशमकापरप्रततजष्ठतकरके सत्केशाश्वतस्रोतकोस्पशिककयाथा।यहीवेग्रन्थहैंिशाश्वतज्ञानकोउद्घादटतकरतेहैं औरजिनकाकथनसावकिाशलकहै।येअपररवतनीयह।ैयेग्रन्थददव्यिीवन-यापनकाऐसाअद्भुत ज्ञानप्रदानकरतेहैंिहमेंभौततकिीवनसेऊपरउठासकताहै।येहमेंसदािारकारहस्यबताते हैंिअन्यग्रन्थोंद्वाराकदावपनहींशमलसकता।

िविनमेंददव्यताकोकैसेिगायािायेऔरआध्याजत्मकउन्नततकेपथपरकैसेअग्रसर हुआिाये,यहकानून,चिककत्साअथवावाखणज्यआददकेककसीग्रन्थद्वारानहींसीखािासकता। अपनी आत्मा की अमर तनयतत के तनमाणि ाथि आपको ववद्यालयों आदद की अथवा सािारण पुस् तकालयों को भरने वाली पुस् तकों से हट कर अन्य ग्रन्थों की ओर िाना पड़ेग ा। आपको आध्याजत्मक ग्रन्थों और उन सन्तों के िीवन की ओर िाना पड़ेग ा जिनमें िीवन-सत्य के अमूल् य रत्न तनदहत हैं। अतुः स्वाध्याय शाश्वत ज्ञान तथा आध्याजत्मक ज्ञान-कोष की स्वखणमि कुं िी है िो हमारेशलएउनकाद्वारखोलदेतीहैऔरसािककोपूणिीवन,अमरिीवनकापथददखातीहै।

अब स्वाध्याय के मनोवैज्ञ ातनक महत्त्व और व्यावहाररक मूल् य के ववषय में वविार करें। मनुष्ट य अपने सामान्य िीवन में स्वाध्याय से तया प्राप्त कर सकता है, इस पर वविार करें। स्वाध्यायकाअत्यन्तगम्भीरऔरबुद्चिसंगतकारणहै।हमिानतेहीहैंककहमारेमनपरप्रत्येक अनुभवकीछापपड़तीहै,प्रत्येकअनुभवमनपरअपनाचिह्नछोड़िाताहै।येचिह्नहीबीबन िाते हैं।आपिानते हीहैं ककवासनाओं केअनुस ारमनकीवृवृ त्तककसप्रकारपररवततति होतीहै। इनसबबातोंकोध्यानमेंरखकरऋवषयोंनेकहाहैककयददमनुष्टयकोउन्नततकरनीहैतथा प्रततकूलवासनाओं परवविियपानीहैतोतनत्य-प्रततमनमेंआने वालीइनवासनाओं कासामना करनेकीकोईववचितनयोजितकरनीहोगी।इनवृवृत्तयोंपरवविियपानेकेशलएहीउन्होंनेस्वाध्याय करनेकोकहाहै।

स्वास्थ्यकुछइसप्रकारसेकायिकरताहै।मानलीजिए,आपककसीलकड़ीकेल्टेमेंकील
ठिलेंऔरबादमेंआपकोमालूमपड़ेककवहकीलनहींठिहए,तबआपउसकीलकोउखाड़नेकी
अपेक्षादूसूरीकीललेकरउसेगाड़नेलगतेहैंतबपहलीकीलतनकलितीहैऔरदूसूरील्टेमें
गड़ितीहै।कुछ-कुछइसीतरहहर्रिरीकोबाहरतनकालनेऔरवासनाकोतनकालफेंकनेमें
बहुत-सीस्नायववकशजततलगितीहै।अत:उसकेबदलेस्वाध्यायकीजिए।

प्रततददन प्रातुः और सायंक ाल आप अतीत के शभन्न-शभन्न युग ों के महापुरु षों से सम्पकि
स्थावपतकरने काप्रयत्नकरते हैं-ऐसे आध्याजत्मकव्यजततयोंसे जिनकेशब्दोंमेंबलहोताहै;
तयोंककवे शब्दवास्तववकअनुभ वसे उद्भूत होते हैं।वे रूपान्तरणकारीशब्दहोते हैं।अतुःजिन
महापुरुषोंकिीवन्तअनुभवइनशास्त्रोंमेंहोतेहैं;आपउनकेसिीसम्पकिमेंआतेहैं।जिन
मनीवषयोंनेयेिमग्रिन्थरिहैं,उनकेशब्दोंमेंआध्याजत्मकउद्बोिनकीशजततरहीहै।अतुःबि
आपककसिीाशमकिग्रन्थकोपढ़नेलगतेहैंतबआपइसभौततकिगत्कोभूलितेहैं।

अतुःस्वाध्यायकाअथि हैिमग्रि न्थोंकेप्रणेत ाओं,वाल्मीकक,व्यासआददकेसमक्षबैठ ना।
यहएकप्रकारकासत्संग है।आपिबस्वाध्यायकरते हैंतोऐसे महापुरु षोंमेंतल्लीनहोिाते हैं
िोआत्म-साक्षात्कारकीदीजप्तसेदीप्तरहेहैं।येमहान्आत्माएँमरकरअतीतहोगयीहों,ऐसा
नहींहै।वेनष्टटनहींहुईं।वेउसशाश्वतसत्तासेएकहोगयीहैं;अतुःउनकाव्यजततत्वशाश्वतहै,
अमरहै।वहनष्टटनहींहोसकता।उनकावहव्यजततत्वसािारणमनुष्टयकेव्यजततत्वि ैसानहीं
होताजिसमेंमृतू यु के समयपररवतनि िोताहै।इसप्रकारआपअदृश्यरूपमेंउपजस्थतसन्तोंके
साथसम्पकिस्थावपतकरतेहैं।प्रबुद्सिन्तोंकीरिनाएँपढ़नेसेआपकोउनकासाहियिशमलताहै।

उपतनषद् कहता है : "स्वाध्यायान्मा प्रमदुः "स्वाध्याय की कदावप उपेक्ष ा न करो। हमारे
ऋवषयोंने स्वाध्यायकीयहमूल् यांक न-प्रकक्रयाबतायीहैजिससे हमश्रेष्टठतममनीवषयोंसे सम्पकि
बनायेरखें।स्वाध्यायकरतेसमययददआपककसीग्रन्थमेंबड़ेतल्लीनहोिायेंतोआपकाचित्त
पूणतिुःददव्यसत्तापरजस्थरहोिायेगािोस्वयंहीएकप्रकारकीसववकल्प-समाचिहै।उससमय
मनसेसभीसांसाररकवविारतनकलितेहैंऔरमनआध्याजत्मकवविारोंमेंडूबिाताहै।यदद
आपतनरन्तरस्वाध्यायकरतेरहें,तोतयाघटटतहोगा?आपइनवविारोंकोमनमेंलायगेंऔरइन
प्रेर रतवविारोंसे भावनाएँ उत्पन्नहोंगीऔरआपकाचित्तभाव-रूपीसम्पदासे भरियेगा।स्वाध्याय
मेंप्रततददनआपमेंसमुन्नतकरनेवालेउदात्तभावोंकाप्रवेशहोताहैिोववषादकेक्षणमेंआपको
साहसप्रदानकरतेहैं।ववषादग्रस्तहोंतोस्वाध्यायआपमेंउत्साहऔरिोशभरेगा।यहएकप्रकार
सेभिोनहैिोआपअपनीआत्माकेशलएकरतेहैं।

आपप्रातु:से रात्रत्र-पयन्ति तसांस ारिरकवातावरणमेंरहते हैं,सांस ारिरकव्यवहारोंमेंलगे रहते हैं। इसशलएअनेकानेकभावनाएँपैदाहोतीहैंऔरसंस्कारबनतेहैं।सन्ध्या-समयस्वाध्यायकीजिए। उससे अध्यात्म-ववरिीसांस ारिरकसंस् कारतनकलियगें ।े इन्हेंबने रहनेकाअवसरकदावपनदीजिए। अतु: स्वाध्याय की एक व्यावहाररक उपयोचगता तो यही है कक अन्तर में आध्याजत्मक वविार उत्पन्न होते हैंऔरसमस्ततसांस ारिरकभावनाओं परअचिकारकरलेते हैं।इसकेअततररततस्वाध्याय एकाग्रताऔरध्यानमेंबहुतसहायकहोताहै।

परन्तुककसप्रकार?
मैंआपकेसमक्षएकदृष्टान्तरखताहूँ।इससमयहमाराउद्देश्यहोताहैमनकोककसी एकददव्यवविारपरदृढ़तापूव कि लगाना।यहीभावप्राथनि ाऔरपू ामेंभीहोताहैककमनअन्ततु: एकहीवविारमेंतनववष्टहिोाये।परन्तुमनसदैवनानाअवांतछतववषयोंकोसोितारहताहै।

एकसािारणअसंस् कृतमनुष्ट यकामनअनेक प्रकारकीववषय-वासनाओं से भरारहताहै। उसकासमस्तचिन्तनइसीसंसारकोलेकरहोताहै।वहिानताहीनहींककोईवस्तुइजन्द्रयोंके अनुभवसेबाहरभीसत्तारखतीहैयानहींरखती।मानलीजिएककआपअनुभवकरेंककवास्तववक ववकासमें,उन्नततमेंयेवविारसहायकनहींहैं,तबआपअचछेवविारोंकोसोिनेऔरशुद्भिाव बनायेरखने काप्रयासकरते हैं।कभीअचछेवविारआते हैंतोकभीबुरे ।मनमक्षक्षकाकीतरहहै किभीअचछीवस्तु परबैठ तीहैतोकभीथूक परभीबैठ ितीहै।इसतरहआपकामनववशभन्न वस्तुओंकेबीिमेंडोलितारहताहै,परन्तुमिुमक्षक्षकासवदिापुष्टपोंपरहीबैठतीहै।वहगन्दगीपर कभीनहीं बैठ ती।मनकोभीमक्षक्षकाकीप्रथमावस्थासे हटाकरतदुपु रान्तमिुम क्षक्षकावाली अवस्थासे भीदूरू करकेउचिावस्थामेंप्रततजष्टठतकरनाहै।वहमनकोकेवलउदात्तवविारोंसे बाँ देताहै,उसेबुरेवविारोंकोप्रश्रयदेनेकाअवसरहीनहींदेता।

मनवर्हिीआत्मसात्करताहिैोउसकेसमक्षबार-बारलायािाीतीहै।आरम्भमेंमन वविोहकरेगा;परन्तिुबआपकोरसशमलनेलगताहैतबआपस्वाध्यायकेत्रबनाभोिनभीकरना पसन्दनकरेंगे।स्वाध्यायमानवि–ीवनमेंआवश्यकबनिाताहै।यहआपकीवास्तववकसत्ताके शलएआहारहै।िबइसकीआदतपड़िातीहैतबआपकीमानशसकितनाकेक्षेत्रमेंआध्याजत्मक वविारहीप्रभावशालीरहेंगे।यहस्वाध्यायकीगहरीआन्तरमनोवैज्ञातनकप्रकक्रयाहै।

५. रामायण में नैतैतकता

शुचिता,आत्म-संयमतथाभगवद्-भजततआध्याजत्मकीवनकेसारभूततत्त्वहैं।भगवान्का प्रत्येकअवतारअपनेतनीआदर्शिवनतथाव्यवहारकेउदात्तउदाहरणोंद्वाराभगवद्-प्राजप्तका सन्देशदेने,मानवताकोउसकीमदहमातथागररमास्मरणकरानेतथाआध्याजत्मकीवनतथा उपलजब्र् के आन्तररक रहस्यों के उद्घाटन करने के शलए होता है। रामावतार की भागवत लीला से हमअत्यचिकप्रकाशतथापथ-प्रदशनिप्राप्तकरतेतथाआध्याजत्मकउपलजब्र्केआन्तरपथपर प्रिुर पे्रेर णाग्रहणकरते हैं।इसमहावतारकीनर-लीलामेंववशभन्नआदशि व्यजततत्वभगवान् के प्रतत आपकेआदशिउपगमनकीववशशष्टताकेववशभन्नघटकोंकोप्रस्तुतकरतेहैं।

रामायणकीनीततप्रत्येकव्यजततकेशलएएकपूणिआदशिहै।अतएवइसववरलतनचिका अध्ययनसाक्षात्परमानन्दकेलोकोत्तरमहासागरमेंुबकीलगानेकेसमानहै।यहसुिामयसरोवर हैजिसमेंस्नानकरने से आपसमस्ततापोंसे मुत तहोिाते हैंतथान्ममृत्ू यु-रूपीपाद-श्रृंखं ला कोत्यागकरउन्नतहोशाश्वतआनन्दतथाअमरत्वकेक्षेत्े्रमेंपिहुाँितेहैं।

आशा तथा तनराशा, पववत्र आदशवि ाद तथा सांस ाररक कपट, आत्म-बशलदान तथा ववषाद, अनिाारकाआक्रमणतथाववतनपात,िमि केप्रततसमपणि तथाअनात्मशंस ीभजतत,दृढ़तातथिैय ,ि अशुभपरववियतथावियोल्लास,ककन्तुसाथही,असारसंसारकेकठोरसंशयालुदृजष्टकोणद्वारा उसकातत्कालकटुबननाऔरअन्ततुःलोकमततथाअपनीजिसवप्रयप्राकेशलएउसकीतनष्ठा प्रमुखतथाप्रथमवस्तुथी,उसकेद्वाराराशसंहांसनकेशलएतनजशत्ततनममितापूणिकठोरमापदण् केशलएअनुकूलहोनेकेशलएएकआदशिराकाअपनेपरमपे्रेमपात्रतथावैयजततकसुखके उत्सगि करने कादुःखदतनणयि -येसबपववत्रिमग्र न्थरामायणकेरंगीनचित्रपटलपरअतीवभव्य रूपसेप्रकटहैं।

जिससमयअन्यदोररातनयोंअथात् किकजष्टकन्तिथालंकामेंतनरंकुशतातथासत्ताकी शलप्सासामान्यबातथीं, उन्हीं ददनोंअयोध्यामेंवृद्ध ावस्थाकोप्राप्तहोरहेएकमहाराकोअपने ददये हुए विन से, जिसमें उन्हें अपने परम वप्रय पुत्र को देश से तनष्टकाशसत करना तथा उसे उत्तराचिकारसेवंचंतिकरनाआवश्यकहोलाथा,वैयजततकअशभरुचिअथवामनोभावकेशलए मुकरनेअथवावापसलेनेकोन्यायोचितठहरानेकाप्रयासनकरउसेपूराकरनेकेशलएभग्नहृदय

होमृत् यु कोवरणकरताहुआपाते हैं।एकबारददयेहुएविनको,उसकाक्षेत्र ककतनाहीअस्पष्टट अथवाप्रयोग-क्षेत्रककतनासुववस्तृतयोंनहो,ाहेवहतनबलिक्षणोंमेंददयागयाहोअथवा पररपतववविार-ववमशिकेअनन्तर;उसकेपररणामतथामूल्यकीओरध्याननदेकरपूराकरनाहै- इसकाकारुखणकरूपसेरिाादशरथकेमाध्यमसेतथाउतनेहीयशस्वीरूपसेरामायणकेनायक उनश्रीरामकेमाध्यमसेउदाहरणप्रस्तुतककयागयाहैजिनकाआत्म-त्यागहोतेहुएभीमिके विानकीमयादिाकोबनायेरखनेकाभव्यमूल्य-बिोमानवताकेशलएहीआदशिरहाहै।

भगवान् रामिन्मियादि ापुरु षोत्तमहैंअिपने मेंमानवीयसम्बन्र्ोंकेसमस्तक्षेते्र ोंमें सवोत्कृष्टटअनुकरणीयव्यवहारकोसाकाररूपददयेहुएहैंतथाउसेअपनेिीवनकीप्रत्येकगतत- ववचिद्वाराअशभव्यततकरतेहैं।रामकेभागवतिीवनकीगाथावास्तववकव्यवहारमेंप्रशस्त आदशवि ाद की गाथा है। इसकी उत्प्रेर णा चिरस्थायी है। इसका आकषणि व्यापक है। इसकी उन्नयनकारीतथारूपान्तरकारिमित्काररकशजततअमोघहै।उनकेिीवन-ववचि;अपनेगुरु,माता- वपता,सहिशमणिी,शमत्रोंतथाशत्रुओंकेप्रततउनकेववशशष्टटव्यवहार;सामाजिकव्यजततकेसम्यक् आिार-व्यवहारतथावतमिानिगत्केअि:पतनकेउपिारकासूत्रप्रदानकरतीहै।िमानुकूलकायि करनेकेशलएआध्याजत्मकसतकिताकीआवश्यकताहुआकरतीहै।उनकीशासन-कलासत्य,ज्ञान तथाअनन्तथाकिाशमकितनयमोंकीअशभव्यजततथी।सम्राट्रामकीदृजष्टटसेएकश्वानतक अलक्षक्षतनहीं रहपाताथा।इसपशु केपररवादकीसुन वाईहुईतथातदनुस ारअपरािीव्यजतत(ो एकब्राह्मणथा)उनकेराज्यसेतनष्टकाशसतककयागया।उन्होंनेिमिकेकठोरशासनसेककसीको भी,यहााँ तकककअपने तनष्टठावान् भाईतथाअपनीपततव्रतािमपि त्नीकोभीछूटनहीं दी।उन्होंने एक चगलहरी पर भी कृ पा की और सागराचिपतत तक को दण्ड ददया। 'सत्यमेव ियते' का तनदशनि उनकेकमोंसेहुआ।उनकाउदाहरणसभीयुगोंकेशलएहै।सभीनीततयााँकेवलइसस्वाभाववकतथा मूल भूत तर्थयकीउपशाखाओं कारूपलेत ीहैं।भगवान् रामने अपने तनिीिीवन-दीपसे इस तर्थयपरप्रकाशिाला।सभीसत्य-प्रेमीरामकेप्रेमीतथाउपासकहैं।

आदशि रािकुमारभरतने अपने कोवस्तुत ः श्रीरामकीऐसीहीभावप्रवणअववजचछन्न,पूण ि तन्मयकारीपूिाकामूतिरूपबनािालाथा।रामकीपववत्रपादुकाओंकेमाध्यमसेभगवान्रामकी पूणिआत्ममयीभजततततथाअहतनशिकीिानेवालीआरािनामेंउन्हेंसंसारकास्मरणनरहा, अपनास्मरणनरहा,ककसीभीवस्तुकास्मरणनरहा।वहरािशसंहासनतथासत्ताकेप्रलोभनके वशीभूतनहींहुए।उन्होंनेरामकोवापसलानेकायथाशतयप्रयासककयाऔरउसमेंअसफलहोने पररामकीपादुकाओंकेप्रतततनचिकेरूपमेंप्रभारीशासनिलानावरणककया।लंकामेंअपना मुख् यकायि समाप्तहोते ही,रामने भरतसे पहले से शमलने तथाउन्हेंअपने आगमनकीसूि ना देने केशलएहनुम ान् कोबहुतशीघ्रभेि ददयाथा।उससमयभरतने अपनीजिसउपासनाका

पररियददया,वैसीउपासनाद्वाराव्यजततभगवान्कोबलात्अपनीओरआकवषतिकरलेताहैतथा
भगवान्कोअपनाबनालेताहै।भगवान्केसाथइसयोगकाआनन्दऐसीहीउपासनाकाफलहै।
भरत का स्मरण तथा उनके व्यजततत्व का चिन्तन आपमें भी इस प्रकार की उपासना का भाव
उत्पन्नकरेगा।

हमारेआध्याजत्मकइततहासमेंमहान् शौयशि ालीलक्ष्मणकेववस्मयकारकव्यजततत्वसे बढ़
करपूणिआत्म-संयम,ववशालआत्म-त्यागतथाअथकऔरअववरतसेवाकाज्वलन्तउदाहरणहमें
अन्यत्रनहींशमलताहै।शमतिाार,संयमतथाशसद्न्ति-तनददिष्टसन्तुशलतिीवन-येसबआत्म-संयम
केमूलभूतअंगहैं।आत्म-संयममेंआत्माचिपत्यअन्ततनदिहतहै।यहसभीलौकककतथाआध्याजत्मक
उपलजब्यिोंकीआिारशशलाहै।िमपिरायणव्यजततकेशलएतोयहउसकाप्राणहीहोनिाादहए।तया
साध्वीसीताकेप्रततलक्ष्मणकाकोईकतव्यिनहींथा?तनश्यिहीउनकाकतव्यिथाऔरवेइसे
ाितेथे;ककन्तुउन्होंनेअपनेअग्रिभ्राताकीआज्ञाकाररतातथाजिसरिाातथाशासकको
सद्गुणतथिामिकामूतिरूपमानतेथे,उसकेआदेशोंकेपालनकरनेकोअतीतमनस्तापकेसाथ
अपनाश्रेष्ठतरकतव्यिसमझा।

ाव्यिजततभगवान्केसमीपिरहाहो,उसेभगवत्स्वरूपबनिानिाादहए।एकमात्र
तनष्टकल्मषव्यजततकोहीभगवद्-अनुभूततकेराज्यकाप्रवेशाचिकारशमलसकताहै।वेव्यजतत
सौभाग्यशालीहैंविविार,वाणीऔरकमिमेंतनष्टकल्मषरहनेतथाअपनिीवनकोतनष्टकल्मषता
कामूत ि रूपबनाने काप्रयासकरते हैं।देवीसीतातथामहान् हनुम ा न् इसभव्यआदशि केप्रोज्ज्वल
उदाहरणहैं।साध्वीसीतातनष्टकल्मषताकिीकतीअजग्नथीं।सीताकठोरतमपरीक्षणों,िीाँोंतथा
तलेशोंकेमध्यभीबाल-भरमुड़ेत्रबनाअपनेआदशोंपरदटकीरहीं।पाततव्रत्य,तनष्टकल्मषतातथा
सवोत्कृष्टसद्गुणोंकीइसअजग्नकेतनकटककसीभीबुराईनेआनेकासाहसनहींककया।माता
ाितीकेशलएइससंसारमेंअपनेरामकेअततररततकुछभीनथा।िबसेसीताकेवपतारािवषि
निकनेउनकापाखणरामकेहाथोंमेंददयातबसेउनकिीवनअपनेपततकेशलएपूणिरूपसे
समवपतिथा।रामउनकेप्राणथे।इसभाताँतअहतनशिववािारतथाभावमेंरामकेचिन्तनसेउनमें
तल्लीनहोनेकेकारणसीताददव्यअजग्नसेसम्पूररतहोगयींजिनकेतनकटकोईभीमशलनताआने
कासाहसनहींकरसकतीथी।सीताएककतव्यितनष्ठपत्नीकेरूपमेंअपनेपततकेप्रारब्िमें
सहभाचगनीबनने केशलएरािाप्रासादकेसुख -सािनोंकोत्यागदेतीहैं।सीताअपनीओरसे नारीत्व
केसवोत्कृष्टआदशिकाउदाहरणप्रस्तुतकरतीहैं।उनकेशुद्मिनमेंअपररशमतिन-सम्पवत्तके
प्रलोभनकोकोईस्थाननहींहै।

हमारेयहााँलक्ष्मण-पत्नीउशमलिासौम्यता,गाम्भीयितथातनु:स्वाथतिाकाउदाहरणहैंजिनकी
ओरवाल्मीककनेभीअचिकध्याननहींददया।तयाएकअिुतुनकपत्नीव्यजततगतइचछातथा
स्वाथि कीअवहेलनाकरअपने पततकोमात्रअपने भ्राताकेप्रततभावुक तापूण ि अनुर ागकेकारण
स्वेच छासे िौदहवषि कीदीघावि चिकेशलएववावाहकेतुर न्तबादहीतनवासि नकेशलएिने देगी?
इसिमग्रिन्थरामायणकेप्रत्येकपृष्ठमेंमानवताकेशलएशशक्षाहैऔरयददअिोव्यजततउनमेंसे
कु छ की ओर भी ध्यान देने की चिन्ता करे और यदद उनको कायि में पररणत करने के शलए उसमें
संक ल्प,शजतत,साहसतथाबलहोतोइसभूल ोककिीवनअपेक्ष ाकृतअचिकसौम्य,सुखी,शान्त,
अथपूिणितथान्यायसंगतहिोयेगा।

पववत्रतातथाभजततकेववरलसद्गुणमेंशौयशिालीहनुमान्सीताकेसमकक्षहिीमग्रिन्थ
रामायणकेपववत्रपृष्ठोंकोलम्बिेगोंसेपारकरतेह।ैहनुमान्भारतीयिाशमकिइततहासमेंसवश्रेिष्ठ
ब्रह्मिारीहैं।वे पूण ि पववत्रता,इजन्यि-तनग्रहतथाआत्मसंय ममयिीवन-यापनकेमहत्त्वाकांक्ष ी
व्यजततयोंकेइष्टदेवहैं।हनुमान्तथादेवीसीताकेव्यजततत्वहमेंइसपववत्रिीवनकीसफलताकी
गुप्तकुंिीप्रदानकरतेह।ैअववरामसेवातथातनु:शेषसमपणिइसआध्याजत्मकरहस्यकासार
प्रस्तुतकरतेहैं।ककजष्टकन्िाकीपववत्रभूशममेंप्रथमशमलनकेपश्िात्सेअपनेभगवत्स्वरूपस्वामी
कीअववरामसेवाउनकीिीवनकेदृढ़अनुरागकाववषयबनगयी।समवपतितनु:स्वाथिसेवाने
हनुमान्केिीवनकोशुद्िदैवीशजततमेंरूपान्तररतकरददया।इसमहान्ब्रह्मिारीकीब्रह्मियि–
शजततकेशलएअसम्भवसम्भवबनगया।भगवान्रामकीसेवाआंतिनेयकेउन्नतिीवनकी
एकमात्रदृढ़अनुर ागकीवस्तु थी।इसमहान् सेव ककीपववत्रता,समपणि तथाभजतत ने उन्हें
भगवान् रामकापरमवप्रयपात्रबनाददया।यहतनु:शेष सिाकसमपणि आध्याजत्मकआदशोंकेशलए
हिााँवतमिानहैवहााँसिाकपववत्रतासेज्योततहोताहै।हनुमान्नेअपनेमेंअसीमशजततततथा
बलकेसाथईश्वरेचछाकेप्रततपूणिआत्म-समपणिकोसंयुततकररखाहै।हनुमान्प्रभुकेअिीन
आज्ञाकारीसेवककेरूपमेंउनकेअववियोद्िाहैं।उनकाअहंप्रभुकेिरणोंमेंअवपतिथातथा
उनकेबलकाउपयोगप्रभुकीसेवामेंहुआ।यहव्यजततकीशजततयोंकासवोत्कृष्टतथापरमउदात्त
उपयोगहै।यहपरमश्रेयस् कोप्राप्तकराताहै।िहााँ परस्वाथपि रता,अहंमन्यतातथाभौततकवादी
उद्देश्यमेंशजततकादुरुपयोगहोताहैवहााँयहववषाद,दु:ख,अशाजन्ततथासम्भ्राजन्तलेआताहै।
मानवीयकायकिलापभागवतीयशसद्िान्तोंसेपृथृतकृतहोनेपरव्यजततकोमपिरायणताकेपथसे
ववपथगामीबनादेतेहैंतथासन्तापलातेहैं।भगवान्कासाजन्नध्यबनायेरखनासम्यक्िीवनका
रहस्य तथा चिरस्थायी और वास्तववक कल्याण की प्रततभूत त है। भव्य आध्याजत्मक आदशों के प्रतत
पूणतिु:समवपतिरहें।इससेआपसवोत्कृष्टकोदटकीपववत्रताकोउन्नतहोंगेऔरभगवान्केसाक्षात्
दशनिकरेंगे।यहिीवनकीउत्कृष्टववशिचमग्रिन्थरामायणकेभततोंकेसमक्षअपनेकोप्रकटकर
देतीहै।

६. श्रीमद्भगवद्गीता का मम ि

गीताप्रत्येकव्यजततकोउसकीआवश्यकता-ववशेषकेअनुकूलप्रत्येकवस्तुप्रदानकरनेवाला साक्षात् ददव्यकल्पतरुहै।वस्तुत ः यहीकारणहैककयद्यवपयहसप्तशतश्लोकोंकाएकलघु ग्रन्थ मात्रहै,महाभारतनामकमहत्तरमहाकाव्यकाकेवलएकखण्डहै,वववृवृत्तमात्रहैतथादशनिकेक्षेत्र् मेंएकमहान्त्रत्रक्-हमारेप्रस्थान-त्रयमेंइसेअद्ववतीयस्थानप्रदानककयागयाहै।गीतापर अगखणतभाष्टयशलखेगयेहैं।इसकेउपदेशोंकाअथि-तनरूपणिाहेकैसेभीककयागयाहो,ककन्तुइस बातसेसभीसहमतहैंककगीतामेंवेदोंकेसन्देशोंकानवनीतहीभरापड़ाहैतथागीतामुख्यतुः व्यावहाररकहै।गीताकेछन्दतथासादहजत्यकरिनाहीऐसीहैककयददएकबारइसग्रन्थकापाठ अथवाश्रवणकरशलयािायेतोइसके शब्दोंकीछापमनपरबहुुतगहरीपड़तीहैतथावे हमेंसदा प्रेरणादेतेरहतेहैं।

गीतामेंतनरूवपतववशभन्नयोग-मागोंकेववस्तृतववववरणमेंनिाकरहमयहााँकेवल भगवद्गीताकेअन्तभागिका,गीताकेममिकाउद्घाटनकरनेकाप्रयासकरेंगे।

इससंसारमेंमनुष्टयकेसमक्षददन-प्रतत-ददनआनेवालीसमस्याओंपरप्रकाशिालनेवाला यहअलौककककशास्त्र-ग्रन्थहमेंस्मरणददलाताहैककहमारापरमशमत्रतथातनकृष्टटशत्रु हमारेअन्दर हीहै।हमारामनिबउचिआत्मासेसंयुततहोताहैतोहमाराशमत्रहोताहैऔरवहीमनिब ऐजन्किववषयोंकीतृष्टणातथावासनासेपूणितनम्नआत्मासेसंयुततहोताहैतबहमाराशत्रुबन िाताहै।कभी-कभीिबमनउचितरप्रकृततसेसम्बद्िहोताहै,तबव्यजततअनुभवकरताहैकक वहसाक्षात्भगवान्हैऔरिबवह(मन)तनम्नप्रकृततसेसम्बद्िहोताहैतोव्यजततअनुभव करताहैककबहशैतानहै।इससेभीबुरीबाततोयहहैककऊध्वमुिखीतथाअिोमुखीखखंचिवप्रायुः साथ-ही-साथकक्रयाशीलहोतेहैंऔरव्यजततप्रायुःकिंकतिव्यववमूढ़-सािहोताहैऔरआश्ियिककत होताहैककवहभगवान्हैअथवाशैतान!

गीताकीघोषणाहै:'उद्िरेदात्मनाऽऽत्मानम्।्'मनकीसहायतासेहीमनकोशुद्िबिनाना होताहै।मनकेएकभागकीसहायतासेउसकेदूसरेभागकोतनयजन्त्रतकरनाहोताहै।मनका

िभागउचिआत्मासे संयु त तहै,उसकीसहायतासे मनकेउसभागकोतनयजन्त्रततथाशुद् ि
करनिाादहएऐिइजन्यिोंतथाउनकेववषयोंसेसम्बद्हो।ऐसेसमयमेंअिुनिएकबहुतहीरोिक
प्रश्नपूछतेहैं:"मनवायुकीतरहप्रमथनशीलहै।उसकातनग्रहकरनादुष्ुटकरहै।वायुकातनग्रह
करनामनकेतनग्रहकरनेकीअपेक्षासरलप्रतीतहोताहै।कफरउसका(मनका)तनग्रहकैसेककया
ियिे?"

इसप्रश्नकाउत्तरदेकरभगवान्कृष्टणयहप्रकटकरतेहैंककवेयथाथविादीहैं।वेइसे
दाशतिनकरूपनहीं देते औरनयहकहते हैंककयहमूख ति ापूण ि प्रश्नहैजिसे अिुनि कोनहीं पूछ ना
िादहए था। भगवान् स्वीकार करते हैं कक मन का तनग्रह कदठन है। यह कदठन अवश्य है, पर
असम्भवनहींहै।अभ्यासतथावैराग्यद्वाराइसकातनग्रहअसम्भवहै।ये(अभ्यासतथावैराग्य)दो
शब्दऐसेहैंजिन्हेंकोईभीसािककभीभीववस्मरणनहींकरसकता।

अभ्यासऔरवैर ाग्यदोपृथ क्पदाथि नहीं हैं।वे परस्परपूर कतथापोषकहैं।वे एकही
शसतकेकेमुखतथापृष्ठहैं।सततअभ्यासकेअभावमेंवैराग्यक्षीणहोिायेगा।वैराग्यकेत्रबना
अभ्याससम्भवहीनहींहै।वहकौन-सीवस्तुहैिोसािककेआत्म-साक्षात्कारकेजस्थरप्रयासमें
अवरोिकबनतीहै?यहवैराग्यकाअभावहै।

अबहमयोगाभ्यासववषयपरआतेहैं।भगवद्गीतासािनाकेव्यावहाररकपक्षपरअपूवि
उपदेश देती है। गीता के िौदहवें तथा सोलहवें अध्याय के क्रमशः 'गुण त्रयववभागयोग' तथा
'दैवासुर सम्पद्ववभागयोग'काअनुश ीलनकीजिए।जिनसद्गुण ोंकाआपकोववकशसतकरनािादहए
तथाजिनदुगु णि ोंकाआपकोउन्मूल नकरनािादहए,उनकीसू िीसोलहवााँ अध्यायप्रदानकरताहै।
आपको ककन ववचारों को प्रश्रय दे ना िादहए, ककस प्रकार दान तथा तप करना िादहए, ककस प्रकार का
भोिनकरनािादहएआददकोप्रदशशितकरनेवालीत्रत्रसाररणीिौदहवााँअध्यायहै।वहतयाहैिोमन
कोइजन्यि-ववषयोंकीओरप्रवादहतकरताहै?येरिोगुणतथातमोगुणहैं।मनमेंसत्त्वकोवचिित
कीजिए,उसकीतनम्नमुखीप्रवृवृत्तरुकिायेगी।गीताआपकोइसतत्त्वकासंविनिकरनेकीववस्तृत
शशक्षादेतीहै।सत्त्ववैराग्यकोपोषणप्रदानकरताहैऔरवैराग्यअभ्यासकोपोषणप्रदानकरताहै।
तबलक्ष्यकीप्राजप्तमेंकेवलसमयकाहीप्रश्नरहताहै-**'तत्सस्वयं योगसंशसद्धः कालेनात्समनन
ववन्दनत'** (गीता:४-३८)।

यददएकबारलक्ष्यकीप्राजप्तहोगयीतोकफरइसदुः खतथामृत् यु से पूण ि संस ारमेंदोबारा
लौटनानहीं होता।यददहमवापसआयगें , तोसंस ारकेदुः खोंकेवशीभूत बद्िीविकेरूपमेंवापस
नहींआयगें,वरंउसिददव्यआत्माकेरूपमेंआयगेंिोमानव-कल्याण(**'सवभूततहहते रता:**')काकायि
करनेहेतुयहााँआतेहैं।

७. श्रीमद्भागवत में भजतत का स्वरूप

श्रीमद्भागवतमहापुराणअष्टादशपुराणोंमेंसेएकतथासर्वाचिकमहत्त्वपूणिपुराणहै।यह 'महापुराण'कहलाताहैतथावविष्णुअथवानारायणकेरूपमेंव्यततभगवद्-सत्ताकीमदहमाका चित्रणकरताहै।भगवान्ववष्टणुसेहमारासर्वाचिकसम्बन्हिै;तयोंककवहहीइसिीवन,संसार तथाववश्विनीनकहिीानेवालीप्रकक्रयाकोपररपुष्टट,सम्पोवषततथाउसकीरक्षाकरनेवालेहैंतथा यहााँघदटतहोनेवालीप्रत्येकवस्तुकेकारणहैं।

भगवत्–्शजततसिैहााँतकहमारासम्बन्हिै,वहतीनमूलभूतरूपोंमेंअशभव्यततहोतीहै। बिभगवत्–्शजततकेसिनिात्मकरूपकीव्यजतत,शरीरिारीअथवामूतिरूपमेंकल्पनाकिीातीहै तोउसेब्रह्मा(वविाता)कहतेहैं।कल्पान्तकेअन्तमेंबियहशजततअन्ततुःइनसभीव्यतत नाम-रूपोंकोएकबारपुनुःअव्यततकेगभिमेंअन्तलीनकरलेतीहैतथिाबइसअन्तलयिकाररणी; नाम-रदहत,रूप-रदहतजस्थततमेंववलयकरनेवालीशजततपरव्यजततत्वकाआरोपणककयिााताहै, तबउसेशशवनामसेअशभदहतकरतेहैं।ककन्तुयेदोनोंकायिसान्तहैं,औरइनदोनोंकीमध्यावचि मेंकोदट-कोदटवषोंतकइनवस्तुओं कीदेखभालकरनीहोतीहै,इनकीसभाँ ालरखनीहोतीहै,इनको सुरक्षक्षतरखनाहोताहैतथाइनकीअवजस्थततकोबनायेरखनेकेशलएजिनकीआवश्यकताहोतीहै, उन सबका सम्भरण करना होता है । अतएव भगवत्–् शजतत का एक अन्य रूप िो यह सब करता है , उसेववष्टणुयानारायणकहतेहैं।

भागवतपुर ाणमेंसृजृ ष्टके संर क्षकभगवान् ववष्टणु कीमदहमाकागुण गानहै।इसके कु लबारह स्कन्िोंमेंदशमस्कन्िकोसवाचि िकमहत्त्वपूण ि स्थानप्राप्तहै।दशमस्कन्िपूण ति ुःश्रीकृष्टणकेरूप मेंहुएभगवान्ववष्टणुकेसवोत्कृष्टटअवतारकेववषयमेंहै।श्रीकृष्टणयमुनानदीकेतटपरमथुरामें प्रकटहुए।िन्मकेतुरन्तबादहीउन्हेंवृनूदावनलिेायागयिाहााँउन्होंनेअपनाबाल्यकाल अलौककककददव्यलीलाओंमेंव्यतीतककया।

उन्होंने अनेक सिािु नोंकीरक्षाकी,बहुतसे दुष्टुट टोंकाववनाशककयातथाबहुसंख् यकलोगों मेंसचिे आध्याजत्मकप्ेरेम कीलहरसवप्रि थमउत्पन्नकी।उन्होंने भगवान् केप्रततभावप्रवणभजतत

प्रवततततिकीअथवाउसकाबिीवपनककयातथाभजततयोग-सिानाकिोन्मददया।वहभारतमें
भजतत के परम पात्र हैं। कृ ष्णावतार से ही भजततयोग का श्रीगणेश हुआ और इसका आिार भागवत
है।सभीभततपववत्रिमग्रिन्थभागवततथाउसकेदशमस्कन्िमेंवखणततिश्रीकृष्णकिीवनकी
घटनाओंसेप्ेरेरणाप्राप्तकरतेहैं।

श्रीकृष्णकीलीलाएँ हमेंभगवान् केप्रततअपने भजततमयपक्षकेप्रयोगकेशलएपूण ि क्षेत्र्
प्रदानकरतीहैं।श्रीकृष्णकिीवन(ववशेषकरउनकीवृन्दावन-लीला),गोवपयोंकाप्रेम,सरलहृदय
गोपबालतथाभगवान् केप्रततमानव-हृदयकागोपबालकोंका-साप्ेरेम भगवान् कृष्णकेअसंख् य
भततोंकेशलएसदाप्रेरणा-स्रोतरहेहैं।

भगवद्भजततकेपिााँभावहै:शान्त,दास्य,सख्य,वात्सल्यतथामिाुय।िइनमेंमिाुयि–भाव
सवोपररहैजिसमेंप्रेमीअपनीप्रेशमकाकेप्रततअथवाप्रेशमकाअपनेवप्रयतमकेप्रततगम्भीर,उत्कट
तथाभावप्रवणप्ेरेमरखतीहै।यहप्ेरेमकासवाचिकउत्कृष्टरूपहै।

गोपीऔरकृष्णकेप्ेरेममेंप्ेरेमकिाोरूपथा,वहीपूणतिाकीपराकाष्ठातकपहुाँिताहै।
ककन्तु ध्यानरहेककयहप्ेरेम परमात्माकेप्रततमानवात्माकेप्ेरेम काप्रतीकहै।गोवपयााँ इसबातसे
भलीभातााँतअवगतथींककभगवान्कृष्णमहान्, ्सवथिापूणिभागवतसत्ताके,अववनाशीतत्त्वके
साक्षात्मूतिरूपहैं।इसज्ञानकेसाथउन्होंनेश्रीकृष्णकोअपनाप्ेरेममुततहस्तसेअवपतिककया।
श्रीमद्भागवतबतलाताहैककककसप्रकारगोवपयोंकेप्रेम कीपरीक्षालीगयीऔरयहउन्हेंककतनी
तपस्या,प्राथनिातथाआरािनाकेउपरान्तउपलब्िहुआ।उन्हेंश्रीकृष्णकाप्ेरेमसहिहीनहीं,वरन्
उग्रतपस्यासेप्राप्तहुआ।वेशीतकालमेंप्रातु:४बिेउठितीींतथायमुनानदीकेदहमवत्शीतल
िलमेंस्नानकरतीथीं।वेशीतसेदठठुरतीहुईमजन्दरिातीींऔरवहााँदेवीकेसम्मुखएकघण्टे
तकपूिाकरतीथीं;तयोंककककसीनेबतायाथाकक'यददतुमश्रीकृष्णकाप्ेरेमप्राप्तकरनािाहती
होतोतुम् हेंयहववशेष तपश्िया तथाअनेक सप्ताहोंतकदेवीकीउपासनाकरनीहोगी।'उन्होंने ऐसा
हीककयातथाअहतनशिश्रीकृष्णसेतनरन्तरप्राथनिाकी:"हमेंआपकेप्रततसच्िेप्ेरेमकादानदेंतथा
प्रततदानमेंअपनाप्ेरेमप्रदानकरें।"भगवान्कृष्णनेकहा:"ठीकहै।मैंपूखणमिाकीएकरात्त्रको
तुम से शमलूाँग ाऔरतुम् हारेप्ेरेम काप्रततदानकरूाँगातथातुम् हेंददव्यप्ेरेम कीभव्यताकेदशनि
कराऊाँगा।"उन्होंनेवंशीबिायीऔरिबवेवहााँआयींतोवेउनकीवंशीकेसंगीतसेपूणतिु:अशभभूत
हो गयीं; तयोंकक वह ददव्य तथा स्वचगकि था। कई सौ गौवपयााँ उनके िुद दिक् एकत्र्त्रत हो गयीं।
अकस्मात्श्रीकृष्णनेभोलेपनकाअशभनयकरनाआरम्भकरददया।वेबोले:"तुमसबकोतयाहो
गयाहै?तुम यहााँ तयोंआयीं? तयायहााँ आनातुम् हारेशलएउचितहै?तयातुम ने अपने-अपने पतत,
माताअथवावपताकीआज्ञाली?अपनेपतत,बच्िोंतथागृह-कायिकोछोड़कररात्त्रकेइससमय

यहाँ आनातुम् हारीि-स ीनवयुव ततयोंकेशलएसवथि ाअनुचितहै।संस ारतयाकहेगा?कृपयािली
ियि,ेंअपनेघरवापसिलिीाय।ें"इसभाताँतवेउनकेउपदेष्टाबनगये।

तयाआपकोमालूमहैककगोवपयोंनेउन्हेंतयाउत्तरददया?इसकापररशीलनआपको
भागवत के दशम स्कन्ि में करना करना िादहए। उन्होंने कहा : "तया आप सिोते हैं कक हमें यह
पतानहींहैककआपकौनहैं?हमअपनेपततयोंकोछोड़करकैसेआसकतीहैं?अपने-अपनेपततयों
मेंवहतयाहैजिससेहमप्रेमकरतीहैं?तयावहअन्तयामिीसत्तानहींहै?हमाराप्रेमअन्तयामिी
सत्ता को पहुुँिता है, और तया आप सभी प्राखणयों के अन्तयामि ी नहीं हैं? तया आप ववश्व-रूप सत्ता
नहींहै?तयाआपवहएकमात्र,अद्ववतीयसत्तानहीहैिैसभीप्रकारकेप्रेमऔरभजततकापात्र
है?यहिानकरहीहमआपकेपासआयीहैं।आपकेप्रेममेंहीमोक्षहै।आपकेप्रेममेंहीउद्िार
तथातनवाणिहै।आपपरमतत्त्वहैं,अनन्तहैं।"इसभाताँतउन्होंनेकृष्टणकोबतलायाककउन्हेंयह
भलीभाताँ तववददतहैककवे ककसके पासआरहीहैं।वे िबकृ ष्टणके पासिातीहैंतोउन्हेंअपनीदेह
कासंज्ञाननहींरहता।अतएवयहवहप्रेमहैिहाँदेह-भावनहींरहताहै;शरीरि-तनानहींरहतीहै।

८. योग

संस्कृतमें'योग'शब्दकीप्रमुखपररभाषाहै-भगवान्केशमलनकीअवस्थाअथवापरमसत्य केसाथएकत्वकीअनुभूतत।अतएव'योग'सत्यानुभूततका,सत्यर्कीतनाका,भगवान्केसाथ शमलन का द्योतक है। योग शब्द के गौण अथि भी हैं। योग वैज्ञ ातनक ढंग से ववकशसत तथा बुद्चिमत्तापूवकिसूत्रबद्र्कीहुईएकव्यावहाररकप्रववचिभीहैिव्यजततकोउसकेशरीर,मनतथा इजन्द्रयोंकेस्वरूपद्वाराउसपरआरोवपतसभीमशलनताओंकोअपनेऊपरसेउतारफेंकनेमेंसक्षम बनातीहैतथापरमसत्तापरअपनेववचारोंकोपूणततियासंकेजन्द्तकरनेमेंसहायकहोतीहै।इस भाताँतयोगकाअथिकोईभीकमिहैिव्यजततअपनीतनम्न-प्रकृततकोशुद्किरने,अपनीइजन्द्रयों कातनग्रहीकरने,अपनेमनकोभगवान्कीओरतनदेशशतकरने,भगवदुपासनकेगम्भीरअन्तस्तल मेंप्रवेशकरनेऔरअन्ततु:भागवतितेनाकेसाथअपनेशाश्वतएकत्वकोअनुभवकरनेकेशलए करताहै।

योग का उपयोग ववश्विनीन है। यद्यवप इसका प्रयोग िमि की रूप-रेखा के अन्तगति ककया िाताहैतथावपयहस्पष्टरूपसेिमिसेपरेभीहै।यहअथिचािशमकतथाककसीवादअथवा शसद्ान्तकीपहुाँचसेपरेहै।इसकीप्रयोिनीयताकीसीमातथाअवचिसमस्तकालकेशलए समस्तमानवि–ाततकीसमपररमाणहै।इसमहान्तथाघटनाओंसेपूणिबीसवींशतीमेंयोगप्रत्येक केशलएर्कमहत्त्वरखताहै,उसेव्यततकरनेकामैंप्रयासकरूाँगा।

प्रथमतथामुख्यबातयहहैककयोगकेवलकलाबािीनहींहै।कुछलोगसमझतेहैंकक योगमुख्यतु:शरीरकेववशभन्नववलक्षणजस्थततयोंमेंकुशलपररचालनयथाशशरकेबलखड़ेहोने अथवापृष्ठ ठवंश कोइर-उिरमोड़ने अथवायोगकेग्रन्थोंमेंप्रदशशति बहुसंख् यकववचित्रमुि ाओं को अपनानेसेसम्बजन्द्तहै।तनश्चयहीयोगाभ्यासकीएकववशेषप्रणालीमेंइनप्रववचियोंकाप्रयोग ककयािाताहै,ककन्तु ये सवाचिकमहत्त्वपूण ि प्रणालीकेअंग भूत भागनहीं हैं।शारीररकमुि ाएाँ अचिक-से-अचिकयोगकेपूरकअथवाइसकेगौणरूपकाकामकरतीहैं।

द्ववतीयतु:योगऐन्द्रीिशिलककौशलकाप्रदशनिनहींहै।मैंइसकाववशेषरूपसेउल्लेखे
इसशलए कर रहा हूाँ कक योग के सम्बन्ि में िो अनेक भ्रान्त िारणाएाँ प्रिशलत हैं, उनमें से यह
िारणानकलीयोचगयोंतथाछद्मवेशीयोचगयोंद्वाराककयेिानेवालेढोंगोंकेकारणउत्पन्नहुईहै।
कोईभीभलीवस्तु हो,उसे पथभ्रष्टलोगबहुतहीसुग मतासे ववकृतकरिलते हैं।ववश्वके
इततहासमेंसदाहीऐसाहुआहै।योग-सम्बन्िीववषयोंकोिान-बूझकररहस्यात्मकरूपदेनेके
पीछेएकस्वाथपिू ण ि उद्देश्यतनदहतहै।दुभु ाग्ि यवशइसकेपररणाम-स्वरूपइससचिे ववज्ञानमेंववकार
आया।अतएव,आपकोयहस्पष्टरूपसेबतलादेनाअसंगतनहोगाककलोगोंकोलुभानेकेशलए
योगकेरूपमेंिोसिबप्रदशशतिककयािारहाहै,वहवस्तुतु:योगनहींहै।योगतनश्ियिही
इन्द्रीिलिनहींहैऔरनहीयहकोईअसिािारणअथवाअप्रातयकरहस्यात्मककौतुककाप्रदशनिहै।

योगफकीरीभीनहीं है,िैस ाककअनेक पयटि कोंतथायात्रत्रयोंतथाववशेष करसमािार-पत्र
वालोंनेअपनीिारणाबनारखीहै।येलोगसनसनीदारतथाकाल्पतनकववषयोंमेंदृढ़अशभरुचि
रखते हैं।इसकारणयेऐसाऊटपटागाँ सोिने लगे हैं ककाटाँ ोंकीशय्यापरलेट ना,भूशि मकेअन्दर
अपने कोगाड़ना,कााँि केटुकड़े िबानाअथवातनगलना,ति ाब(ऐशसि)पानकरना,कीलेंतनगलना
अथवासुईतथाआलवपनिुभानाआददआत्म-यन्त्रणायोगकाएकरूपहै।इसकायोगसेकोई
सम्बन्िनहींहैऔरनसचिेयोचगयोंकाइनसबसेकुछसरोकारहै।

योगकोईभयावहआनुष्ट ठातनकअथवाववलक्षणिाशमकि कृत्यभीनहीं है।यहसुख वादनहीं
है।यहमूततत–पूिानहींहै।यहकर-सामुदिकववज्ञाननहींहै।यहदीक्षा-ग्रहणनहींहै।यहफशलत
ज्योततषनहीं है।यहपर-ववािार-ज्ञाननहीं हैऔरनयहदुष्ुट टप्रेत ात्माओं अथवाभूत बािाओं के
तनवारणाथिताबीि(यन्त्र)ववतरणहीहै।इनमेंसेकोईभीयोगनहींहै।यददलोगअपनेकोयोगी
कहते हैंऔरअपने योगकोइनसिािारणकौशलोंकेप्रदशनि से व्यततकरते हैं,तोवे योगशब्दका
दुरुपयोगकरतेहैं।योगआत्म-सम्मोहनअथवास्व-सम्मोहननहींहै।यहिादू–टूटोनाकरनाअथवा
नीरसमिु ाओं काकरनानहीं है।यहसंल ातयकाति ाब(Lysergicacid)अथवावनकुमारीकाक्षारभ
(Mescalin)अथवामेजतसकोमूलकेनागफलकेपत्तोंसेबनेमादकिव्य(Peyote)अथवाददव्य
छत्रक (Divine Mushroom) के मादक के सेव न से प्राप्त (खजण्ति मनस्कता तथा ववभ्रम का)
अनुभवनहींहैं।येअनुभवयोगनहींहैंऔरनयेयोगकीउपिहीहै।

योगकोईिाशमकिपन्थभीनहींहै।यहसिहैककइसमेंकुछप्राचयिारणाएाँअवश्यहैं;
ककन्तुइनिारणाओंकावास्तववकववज्ञानकेउद्ववकाससेकोईभीसम्बन्िनहींहै।योगमेंऐसी
अत्यन्तववकशसततथाव्यावहाररकप्रववचियााँसमाववष्टहैंजिनकाउपयोगककसीभीिातत,राष्ट्र,
वण,िमत,िाशमकिसंस्थाअथवासम्प्रदायकाव्यजततकरसकताहै।योग-ववज्ञानकाउद्ववकासउस

समयहुआिबदाशति नकपररभाषाएँ रूपिारणकररहीथीं तथादहन्दुओं किीाशमकि िारणाओं का सूत्र ीकरणहोरहाथा।इसमेंकुछआध्याजत्मकिारणाएँ ववशेष रूपसे दहन्दू तथाप्राचयहैं;ककन्तु योग, ो इसकी दाशति नक तथा आध्याजत्मक पृष्ठ ठभूश म से. पृथ तकरणीय है, ववश्विनीन तथा व्यावहाररकमूल्यकाववज्ञानहै।योगतत्त्वतु:आध्याजत्मकववचियोंसेसम्बजन्तिआध्याजत्मकववषय है।यहपरमसत्ताका,सर्भीीविररयोंकेकेन्भिगवान् कासाक्षात्कारकरने कीददशामेंपूण रूि पेण व्यावहाररकमागिहै।औरयहसम्पूणिमानवर्–िततकीपैतृकसम्पवत्तहै।

पूज्यगुरुदेवश्रीस्वामीशशवानन्दीमहारियोगकेमहत्त्वतथाउसकीवास्तववकताके ववषयमेंएकसुन् दरदृष्टान्तसुन ायाकरते थे। एकवनtildepiववशालवृकूष था।उसकीएकशाखा केअजन्तमछोरपरएकबहुतबड़ामिुकोशथा;ककन्तुवृकूषकेशशखरकाआरोहदुसुसाध्यथा। व्यजततकोपद-स्थानबनानेकेशलएवृकूषकेतनेमेंकटानकरनीथीऔरतत्पश्ात्आरोहणकरना था;ककन्तुइसकेशलएमहान्र्ियितथाकमिकौशलअपेक्षक्षतथे।

एकपतलीलताउसवृकूषकाआशलंगंनकरतीथीऔरउसकेबहुतऊँभिागतकपहुुँिुकी थी।यद्यवपयहवायु मेंसंक टपूण ि जस्थततमेंझूल रहीथी,परसशततप्रतीतहोतीथी।एकलोभी व्यजततनेत्रबनाअचिकप्रयासकेमिुपरअचिकारप्राप्तकरनेकीइचछासेउसवल्लरीकीएकमात्र सहायतासे वृकूष परिढ़नाआरम्भकरददया।वहइतनाअचिकआलसीथाककउसने वृकूष केतने में काटकरपद-स्थाननहीं बनाया।उसने सिोाककउसे वृकूष केशशखरतकपहुुँिने मेंवल्लरीपयाप्ति सशततहै।िबवहभूशमसेकुछफीटऊपरपहुुँिातोप्रिण्वायुकेएकझोंकेनेलताकोतोड़ ददया।वहव्यजततिड़ामसेभूशमपरआचगरा।

उनलोगोंकीजस्थततभीइसकेसमानहीहैीसुगममागिद्वाराकाम्य-कमि–रूपीलताकी सहायतासेमोक्ष-रूपीमिुकापानकरनेकेशलएयोग-रूपीवृकूषपरआरोहणकाप्रयासकरतेहैं। योग-पन्थयोग-रूपीवृकूषकेतनेकेसाथ-साथहै।आपकोप्रयासकरकेइसपरपद-स्थानबनानेका काम करना है। यही सािना है। आपको यम से आरम्भ करके तनयम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, िारणा,ध्यानतकएक-एकपगआरोहणकरनाहैऔरतबसमाचि-रूपीशशखरपरपहुुँिनाहै।इसका कोईसुगममागिनहींहै।आपउत्तरदातयत्वसेबिकरनहींतनकलसकते।दूसूरीओर,यददआप काम्य-कमि कीसहायतासे आरोहणकरते हैं-येकाम्य-कमि भीशजततशालीददखायीपड़ते हैं-तोये आपकोयोगकेशशखरपरनहीं पहुुँिसकेंगे। ि बस्वाथपूि ण ि कामनाओं की,इहलौककककपदाथोंतथा स्वगि– सुखकेलोभकीवायुप्रवादहतहोगीतोयहकमि–रूपीलताटूटिायेगीऔरआपकाघोरपतन होगा।

हे मानव! काम्य-कमि आपको योग के लक्ष्य तक नहीं पहुुँायिगें। के वल तनष्टकाम-कमि ही आपकी सहायता करेंगे। सािना का अथि है कठोरतम माग।ि आपको दुगु मि पथ से ही शशखर पर आरोहणकरनाहोगा;ककन्तुयददएकबारशशखरपरपहुुँगियेतोआपअमरत्व-सुिाकापान करेंगे।

योग की ववववि प्रणाशलयाँ हैं। मैं उनका संक्षे प में वववरण प्रस्तुत करूँ गा। इनमें प्रथम बौद्चिकप्रणालीहैजिसमेंव्यजततअपनीमानशसकशजततकोसववोत्कृष्टसािनाकेशलए,परमसत् केसाक्षात्कारकेशलएउपयोगकरताहै।यहज्ञानयोगअथवाबुद्चियोगकेनामसेप्रशसद्िहै। व्यजततब्रह्मके स्वरूपकीव्याख्याओं कोश्रवणकरताहै,परमसत्ताकाबोिप्राप्तकरताहै,तब इसपरबार-बारमननकेद्वारावहअन्तमेंवववेक-शजततसेध्यानकीगहराइयोंमेंप्रवेशकरताहै।

द्ववतीयप्रणालीभजततयोगअथवाप्रेमयोगकेनामसेज्ञातहै।यहअतीववप्रयकरमागिहै िावप्रवणप्रकृततकेव्यजततकेशलएववशेषरूपसेउपयुततऔरसहिहीअपनानेयोग्यहै। परमात्माकेववषयमेंतनरन्तरचिन्तनकरने,उनकीप्राथिनाकरने,उनकीउपासनाकरनेतथाउनका साजन्नध्यअनुभवकरनेसेव्यजततउनकेसाथघतनष्टठसम्बन्िववकशसतकरताहै।यहसाजन्नध्य इतनातनकटकाहोताहैककव्यजततस्वभावतुःहीपरमात्माकेसाथिलताहै,उनसेवाताितलापकरता है,उनमेंरहता,िलता-कफरतातथाअपनाअजस्तत्वरखताहै।इससेएकप्रकारसम्बन्िस्थावपतहो िाताहैजिससेशुद्िप्रेमपरमात्माकीओरप्रवादहतहोनेलगताहै।इससािनामेंमानवपूणतुः एकीभूतहोिाताहै।

तृतीयप्रणालीमें,िीवनकेकायि–कलापकेसभीपहलूभगवान्कोसमवपितककयेिातेहैं। इसभाताँततनष्टकाम्यताकेओिारपरमनुष्टयकेकतिव्यस्वयंमेंपूिाबनिातेहैं।यहकमियोग अथवातनष्टकामकमि केनामसे ववख्यातहै।इसप्रणालीमेंप्रमुख तथामहत्त्वपूण ि कायि हैअहंभाव कापरररत्याग।िबवैयजततकअहंकापूणतुःपरररत्यागकरददयािाताहै,तबइसभूलोककेसभी प्राणीस्पष्टटरूपसे ऐसे दृजष्टगोिरहोने लगते हैंमानोवहभगवान् कीसाक्षात् अशभव्यजततयाँ हों अथविाल-मजन्दरहोंजिनमेंभगवान् प्रततजष्टठतहैं।इसअवस्थामेंदूसरोंकीसेव ास्वाभाववकतथा सरलबनिातीहैऔरप्रत्येककायि सांस ाररककायि केरूपमेंनहीं वरन् भगवत्पूि ाकेरूपमें तनष्टपाददतककये िाते हैं।अपनीगततशीलताकोभगवत्साक्षात्कारमेंरूपान्तरणतकरने मेंसंल ग्न व्यजततसवित्रहीभगवत्पूिाकरसकताहै।वविद्यालयhatoverlineHअध्यापक,चिककत्सालयमें चिककत्सक,कृवषक्षेत्रमेंकृषक,शेयरबािारhatoverlineHव्यवसायी-व्यावहाररककायिमेंसंलग्न प्रत्येकव्यजततववनम्रतथाश्रद्िास्पिदआन्तररकअशभवृवृत्तअपनाकरअपनीगततशीलताकोववशुद्ि भजततमेंरूपान्तरणतकरसकताहै।

तुिथिप्रणालीमेंव्यजततएकअतीववशशष्टप्रकक्रयामेंसंलग्नहोताहैजिसमेंसमस्तवविार
भगवान् मेंववलीनकरददयेिाते हैं।व्यजततभगवान् कोअजस्तत्वके के न्द्रके रूपमेंअचिकाचिक
िानेलगताहै।यहभीअत्यन्तरमणीयमागिहै।यहराियोगअथवाध्यानयोगकेनामसे
ववख्याता है। वविार मानवव्यि की गतत है। मानसव्यि की गतत प्राण नामक अन्तजस्थत प्राणिार
िविन-शजततकीगततसेतथाशरीरकीगततसेउत्पन्नहोतीहै।इसभाताँतवविार,प्राणतथाशरीर
अन्तु:सम्बद्हैं।शरीरकापूणीदमनतथातनयन्त्रणउसेएकतनयततथाजस्थरआसनमेंरख
कर सम्पाददतककयािा सकता है । आन्तररक मानशसक शजततका दमन तथा तनयन्त्रण प्राणायाम की
प्रववचि के अभ्यास से हो सकता है और अन्त में इस नानाववि ववश्व से मन की सभी ववकीणि
रजश्मयों का प्रत्याहरण ककया ि सकता है तथा उन्हें के वल भगवत्सम्बन्िी वविार पर ही संके जन्ति
ककया िा सकता है। इस िरम त्रबन्दु तक पहुाँिने की प्रकक्रया में व्यजतत मन के िरातल से ऊपर
उजत्थतहोताहै,वहअततिेतनावस्था(समाचि)मेंप्रवेशकरतहैजिसमेंब्रह्मसेअभेदकीअनुभूतत
होतीहैतथावहशरीरके बन्िनिऔरमृत्यु के पाशसे सदा-सवदि ाके शलएमुत तहोिाताहै।ऐसे
अनेकउत्साहप्रदसंकेतहैंककपाश्ित्यदेशोंकेअनेकसािकयोगकोअपनीसभ्यताकीिदटल
समस्याओंकेसमािानकीसवोात्तमचिककउपयुततववचिमानतेहैं।

९. वेदान्त की शशक्षाए ाँ

वेद ान्तकेशसद्धान्तानुस ारव्यजष्टट-भावकामूल कारणअज्ञानअथवामूल ाववद्याहैऔरयह मूल ाववद्यासवप्रि थमोरूपािरणकरतीहै,वहहैपरमएकत्वकेववशशष्टटलक्षणोंसे युत तपरम िेतनामेंद्वैतभावना।अज्ञानकेकारणहीयहभावउत्पन्नहोताहैकक'मैंशभन्नहूाँऔरयह संसारशभन्नहै।'यहद्वैत-भावजिसकारणसेआताहै,वहअध्यासनामसेज्ञातहै।िेतना ब्रह्माण्तिथाअसीमसे तादाम्त्यस्थावपतकरने केस्थानपरससीमशरीरसे तादात्म्यकरलेत ी है।यहअववद्याकीप्रथमअशभव्यजततहै।मैं यहशरीरहूाँ,मैं यहमनहूाँ,मैं यहभावहूाँ,मैं यह वविारहूाँ-इसप्रकारअध्यासोंकीएकश्रृंखलिालपड़तीहैिोककइसआद्यभ्राजन्तमेंबद्मूल होतेहैंककमैंएकपृथक्सत्ताहूाँ।यहआद्यद्वैत-भावसम्पूणिअध्यास-समूहकाएकताताँा-सालगा देताहैऔरतबइसकेकारणआपकोअध्यारोप-एककागुणदूसरेमेंआरोवपतकरनेकाभ्रमप्राप्त होताहै।आपशुद् िैत न्यमेंअनेक रूपतथागुण आरोवपतकरते हैंिोककउसकीमूल भूत प्रकृतत मेंववद्यमाननहीं होते। अतएवविग् कासमिू ादृश्य-प्रपंि प्रकटहोिाताहै।प्रथम,वहााँ अज्ञान उपजस्थतहोताहै,तबद्वैत-भावप्रकटहोताहैऔरतत्पश्िात्शरीर,मनआददकाअध्यासहोताहै और यह अज्ञान मन-असम्यक् वविार पर आिाररत होता है। अतएव इस प्रकक्रया को एक बार पुन ः प्रततवततितकरनेकेशलएसम्यक्वविारकोएकशजततशालीतत्त्वकेरूपमेंबतायािाताहै।स्वामी वववेकानन्दनेइसकाउल्लेखआिुतनकसम्मोहन-ववद्याकीशब्दावलीमेंककयाहै।उन्होंनेकहाहैकक प्राणीनेस्वयंकोइसअसम्यक्वविारसेसम्मोदहतकरशलयाहैककवहशरीरहै।अतएवआपको इससम्मोहनकोशमटानाहै।वहकहतेहैंककवेदान्तसम्यक्वविारतथासम्यक्वववेकद्वारा इससम्मोहनकोदूरकरनेकाएकप्रभावशालीसािनहै।आपकोइससम्मोहनकोदूरकरना िादहए।यहीसमुचितववचिहैतथासम्पूणिवेदाजन्तकसािनाइससम्यक्वविारपरआिाररतहै।

हमारेगुरुदेवश्रीस्वामीशशवानन्दिीमहारािनेइसजस्थततकासुन्दरदृष्टटान्तकेरूपमें वणिनककयाहै:

एकबड़े ि र्मींद ारने अपनीभू-सम्पवत्तकेऊपरएकप्रततततनचितनयुत तककया।लोगोंको उसकीआज्ञाकापालनकरनेकाआदेशददयागयातथाउन्हेंयहबतायागयाककउनकेशासन, तनयुज तततथासेव ा-मुज ततके अचिकारउसप्रततततनचिकोसम्प्राप्तहैं।यद्यवपिर्मींद ारदूरू से उस प्रततततनचितथाउसकीगततववचियोंपरदृजष्टटरखेहुएथा;ककन्तुउसनेप्रततततनचिकोऐसादशायियाकक वहवहााँउपजस्थतनहींहै।शनैः-शनैः वहप्रततततनचिऔरअचिकउद्तितथाअहंकारीबनगया।एक ददनएकसिाु उसिर्मींद ारसे शमलने आया।प्रततततनचिने उससिाु कीकठोरभत्सनि ाकीऔरकहा, "ि र्मींद ारकहााँ है?यहााँ ऐसाकोईव्यजततनहीं है।मैं हीसवस्ि वहूाँ।आपकिोो-कुछिादहए,मुझ से मागाो।"सिाुमेंअलौककककशजततयााँथीं।उसनेउचिस्वरमेंकहा, "ि र्मींदार,कृपयायहााँआइएतथा इसव्यजततकोप्रबुद्किीजिए।"ि र्मींदार,मानोककइसआह्वानकीप्रतीक्षाकररहाहो,बेगपूवकि अन्दरआया।प्रततततनचिने लज्िासे अपनाशशरझुकु ाशलयातथािर्मींद ारऔरसिाु किरणोंमें दण्वित्प्रणामककया।ि र्मींदारनेप्रततततनचिकोतनलजम्बतकरददयाऔरउसकीपुनतनयुिजततततबकी बिउसनेअपनीभूलपूणिरूपसेअनुभवकीतथािर्मींदारकेअचिराज्यकोकभीभीअस्वीकारन करनेतथाअपनेसम्पकिमेंआनेवालेसभीलोगोंकेसम्मुखउनकेगुणगानकीतनष्टकपटतासे प्रततज्ञाकी।

इसदृष्टटान्तकाआन्तररकभावहैःि र्मींदारपरमप्रभुपरमात्माहै।प्रततततनचिमनहै।मन परम प्रभु परमात्मा (ि त ना) से उत्पन्न है; यह उनके ही प्रकश से प्रकाशशत होता है। इसकी अपनी कोईस्वतन्त्रसत्तानहींहै,ककन्तुऐसाप्रतीतहोताहैककमानोइसकीशजततयााँअसीमहैं;तयोंकक परमात्माने ववश्व-लीलाकिोलू रखने केशलएमनकोअपनाप्रततततनचितनयुत तककयाहै।मन कल्पना करता है कक वह इजन्द्रयों का तनयामक है। दुष्टु ट मन ि ीरे-ि ीरे अपने से श्रेष्टठ शजतत को नकारनेलगताहै।तबभगवत्साक्षात्कार-प्राप्तसिाुआकरमनकोपरमात्माकास्मरणददलातेहैं; ककन्तु दुष्टु टमनपरमात्म-सत्ताके अजस्तत्वकोअस्वीकारकरताहैऔरकहताहैः"परमात्माअथवा भगवान्कहााँहैं?मैंहीसवस्िवहूाँ।"ककन्तुगुरुअथवाभगवत्साक्षात्कार-प्राप्तसन्तसहिहीपराजित नहीं होते। वे व्यजततकेकणकिु हरोंमेंभगवन्नामोचिारणकरते हैंऔरउसे दीक्षक्षतकरते हैं।व्यजतत उचितरशजततकाअनुभवकरताहै।वहभगवान्केसवव्यािपकतथातनत्यववद्यमानस्वरूपको पहिानताहै।वहभगवान्कोआत्म-समपिणकरताहै।प्रभुमनकोतुरन्तपदमुततकरतेहैं।ि ब मनलुप्तहिोताहैतबव्यजततसमाचिमेंप्रवेशकरताहैतथाभगवद्-दशनिकाआनन्दभोगता है।ि बवहसमाचिसेउठताहैतबवहपूणतिुःरूपान्तररततथापररष्टकृतव्यजततबनिाताहै।वह प्रभुकोकभीननकारनेतथाउनकीमदहमाकासततगानकरनेकीप्रततज्ञाकरताहै।

वेद ान्तसािनि-तुष्ट टयतनिारि रतकरताहै।येहैं ववववेक ,वैर ाग्य,ष्सम्पत् (शम,दम, उपरतत,तततततक्षा,श्रद्िाऔरसमािान)तथामुमुक्षुत्व।अहिताओंसेसम्पन्नहोनेकेपश्िात्ही

व्यजतत ज्ञानयोग की सिाना कर सकता है। अतु: प्रािीन-कालीन ऋवषयों तथा मुत नयों ने सत् के
स्वरूपकेश्रवणकोतनिारिरतककयाहैऔरयहैसाककआपिानतेहैं,वेदान्तकाएकअंगहै।
अतएवव्यजततकोिादहएककवहववेककरतारहेतथासम्यक्ववािारिराबनायेरखे।वेदान्त
आपकोएकऐसाढािााँप्रदानकरताहैजिसकेद्वाराआपकोअपनीवविारिराकोसत्यकीददशामें
प्रवादहतकरनाहैऔरआपइसवास्तववककायिकोमननद्वाराकरतेहैं।मननकेिरमोत्कषिकी
अवस्था में आप तनददध्यासन की जस्थतत प्राप्त करते हैं और आप िेत ना की ववववि प्रकार की
अततमानशसकअवस्थाएाँप्राप्तकरतेहैंिोसमाचिकहलातीहै।सवोत्कृष्टसमाचिअद्वैतकहलाती
है।िबमनअपनाकायि व्यापारबन्दकरदेताहै,तबकोईभीअसत् अनुभ वनहीं होसकताहै।
अभ्यास के रूप में व्यतत वविारों का प्रततकार करना वेद ान्तक सािना की आभ्यन्तर प्रकक्रया है।
ऋवषयोंनेउपतनषद्मेंघोषणाकीहै:"योवैभूमातत्सुखम्-भूमा(असीम)कीजस्थततमेंहीसुख
है।

सत्ताएकहोनेकेकारणमानवाततभीएकहीहै;तयोंककववश्वकेअन्तु:स्वरूपमें
एकरूपता उसका तनयम है। बाह्यतु: वववविता अथवा असमानता प्रकृ तत का तनयम है; ककन्तु
अन्तु:स्वरूप में एकरूपता अथवा एकता िीवन का लक्ष्य है। बाह्य, दृश्य, भौततक िगत् के सभी
तत्त्वोंकोलीजिएअथवासृष्ट टप्राखणयोंकीववववविप्राततयोंकोहीले लीजिए,आपपायगें ककवे इस
भूतलपरसवित्रएकहीह।ैिाहेईसाइयोंकादेशहो,मुसलमानोंकादेशहो,बौद्िोंकादेशहो
अथवादहन्दुओंकादेशहो-आकाशसवित्रएकहीहै।िलएकहीहै;भूशमएकहीहै;िूप,वायु,वृक्ष
तथावन,प्रकाशतथाअन्िकार-सभीसवित्रएकहीहैं।इससमग्रसंसारमेंपूणिएकता,अशभन्नता,
एकरूपतातथासादृश्यहै।मानवाततएकहै।िोवीमानवकीिाततएकहै।मानवाततकी
एकताएकऐसातर्थयहैजिसेनकारानहींिासकता।तनरीक्षणअप्रततरोध्यरूपसेहमेंइसीतनष्टकषि
पर पहुाँिाता है। एक ओर तो हमारे समक्ष मानवातत की यह एकता है और दूसू री ओर उपतनषदों
काकथनहै:"एकमेवाद्ववतीयंब्रह्म"-एकमात्रब्रह्मकीसत्ताहै।ब्रह्मकेअततररततदूसूरीऔर
ककसी वस्तु की सत्ता नहीं है। इस भााँ त एकता के दो छोर स्थावपत होने पर उनके मध्य का क्षेत्र ,
उनकेअन्योन्यकक्रयातथापरस्परसम्बन्िकाक्षेत्र,यहिीवनतथाउनकेअनुभवकरनेकीप्रकक्रया
तथासम्बन्िजिसे हमिमि कीसंज्ञ ादेते हैं,स्वभावतु:हीएकहोनािादहए।यहभीउसीतनयमसे
शाशसतहोनािादहए।पूणिएकतामेंएकत्वकेस्वरूपकीगन्िहोनीिादहए।श्रद्िालुईसाइयोंकी
िारणाकेअनुसारस्वगिमेंभगवान्केशसंहासनकेतनकटएकपरमानन्दकीशाश्वतजस्थततहैिहााँ
व्यजतत,दु:ख,पीड़ा,शोकतथामृत्युसेसदा-सवदाकेशलएमुततहोिाताहै।इसलामिमिकी
स्वगि सम्बन्िी िारणा में ववहारोद्यान हैं। परम तनवाणि असीम अतनविनीय शाजन्त है जिसे बौद्ि
प्राप्तकरते हैं।औपतनषद्मि (वेद ान्त)केअनुस ारसजचिदानन्दकेआनन्दमेंव्यजततअमर,भय-

रदहत,प्रकाशपूणितथातनत्यानन्दपूणिबनिाताहै।प्रत्येकिमिअन्तमेंअपनेलक्ष्यकेरूपमें असीमशाजन्त,शाश्वतआनन्दतथाअनन्तप्रकाशकीकल्पनाकरताहै।

हमें इन एकीकारी स्वर-चिह्नों को सदा स्मरण रखना िादहए िो सभी िमों के मूल में हैं। हमेंसमग्रमानवि–ाततकेसम्मुखइसकीघोषणाकरनेकाप्रयत्नकरनिाादहएजिससेककइन मूल भूत एकीकारी तत्त्वों को दृजष्टट से ओझल करने के पररणाम-स्वरूप उत्पन्न बाह्य संघ ष,ि प्रततद्वन्द्वतातथापृथृकत्वहमारेभूतलसेसदाकेशलएदूरूककयेिासकेंतथामानवि–ाततमें शाजन्ततथासद्भावसदाअशभभावीरहे।वेदान्तकाआह्वानहै:**“उविष्तत जाग्रत प्राप्य वरान्न्नबोधत"**-उठो,िागोऔरश्रेष्टठमहापुरुषोंकेपासिाकरउसपरब्रह्मकोिानलो।

श्री स्वामी चिदावन्द

पिूनीयगुरुदेवश्रीस्वामीशशवानन्दकेयोग्यआध्याजत्मकउत्तराचिकारीश्रीस्वामीचिदानन्द के ववषय में कहा गया है- "यदद कोई कृ श काया के पीछे तछपे आत्मवीर को, सौम्य िेह रे के पीछे तछपे तनयजन्त्रतहृदयको,कमि कीगततशीलताकेपीछेतछपीगहनमानशसकशाजन्तकोतथा व्यजततगतस्तरीयप्रेम-पररियािकेपीछेतछपीतनवैयजततकअनासजततकादशनिकरनिााहताहै,तो उसेस्वामीचिदानन्दसेभेंटकरनिीादहए।"

स्वामीचिदानन्दनेदक्षक्षणभारतकेएकसमृद्दपररवारमें२४शसतम्बर१९१६कोिन्म शलयाथा।प्रारम्भसे हीपरम्पराओं औरकमकि ाण्डोंमेंउनकीरुचिथी।मंिास(िेन्नै)के जस्थतलोयोला कालेिकेवहएकप्रततभाशालीववद्याथीथे।उनपररेसक्राइस्टकेआदमोंऔरउपदेशोंकीबहुत गहरीछापपड़ी।उन्होंनेदहन्दू–संस्कृततकेतत्त्वोंकेसाथउनकासमन्वयकरशलया।श्रीरामकृष्ण तथाअपने गुरु देवश्रीस्वामीशशवानन्दसे वहअत्यचिकप्रभाववतरहे।वषि १९४३मेंवहगुरु देवकी शरणमेंआगये।तबसेउनकेगुरुदेवकाआश्रमउनकाघरबनगयातथादडिवाइनलाइफ सोसायटीकेमहान्आदशिउनकेसेवा-काययोंकीओारशशलाबनगये।

प्रारम्भसेहीस्वामीचिदानन्दमेंरोचगयोंऔरदु:खीव्यजततयोंकीसेवाकरनेकाअतीव उत्साहथा।अपनीबाल्यावस्थामेंउन्होंने अपने घरकेलॉनमेंकुजष्ठयोंकेशलएझोपडड़यााँ तनशमति करवादीथीं औरउन्हेंदेव-तुल् यमानकरवहउनकीपररियाि ककयाकरते थे। अपने आध्याजत्मकपुत्र तथावप्रयशशष्टयस्वामीचिदानन्दकेववषयमेंस्वामीशशवानन्दनै े

कहाथा-"चिदानन्दिीवन्मुतत,महान्सन्त,आदशियोगीतथापराभततहैं।इसके अततररततभीवहबहुतकु छहैं।अपने वपछले िन्ममेंवहएकमहान् योगीतथासन्तथे। उनके प्रविनउनकेपववत्रहृदयकेभावोद्गारतथाउनकीप्राततभज्ञानात्मकप्रज्ञाकेप्रकटीकरणहैं।वहएक

व्यावहाररकवेदान्तीहैं।उनकेशब्दोंमेंअद्भुतप्रभावकशजततहै।एकमहान्शमशनकोपूराकरने केशलएउन्होंनेनिम्नशलयाहै।"

एकउत्कृष्टसंन्यासीकेरूपमेंआध्याजत्मकिुमुबकत्वकेगुणकिनीस्वामिीीअनचगनत व्यजततयोंकेवप्रयपात्रबनगयेतथासंसार-भरमेंददव्यीवनकेमहान्आदशोंकेपुनरुज्जीविनके शलएसभीददशाओंमेंकदठनपररश्रमकरते-करतेअन्ततुः२८अगस्त२००८कोब्रह्मलीनहोगये।